

॥ श्रीः ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
592
✚

श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितं
श्रीपद्ममहापुराणम्

हिन्दीटीका-अकारादिश्लोकानुक्रमणी सहित

(प्रथम भाग : सृष्टि खण्ड)

सम्पादक एवं टीकाकार
आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी
(श्रीधराचार्य)



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रम

१. सृष्टिखण्ड

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|--|-------|
| १. | पुराण का उपक्रम और उसका स्वरूप | १ |
| २. | सृष्टिखण्ड की विषयानुक्रमिका तथा भीष्म पुलस्त्य संवाद | ६ |
| ३. | ब्रह्माजी की आयु, युगादि काल का वर्णन, पृथिवी का उद्धार तथा ब्रह्माजी द्वारा की गयी अनेक प्रकार की सृष्टियों का वर्णन | १६ |
| ४. | समुद्र मंथन के प्रसङ्ग में दुर्वासा महर्षि द्वारा इन्द्र को शाप, देवों तथा दैत्यों द्वारा समुद्र मंथन, समुद्र से सुरभि इत्यादि रत्नों की उत्पत्ति, लक्ष्मी की उत्पत्ति और लक्ष्मी द्वारा विष्णु का वरण, देवताओं द्वारा अमृत का पान, पुनः भृगु की पुत्री के रूप में लक्ष्मी की उत्पत्ति का वर्णन, भृगु महर्षि का भगवान् विष्णु को शाप, ब्रह्माजी द्वारा पुनः सृष्टि, नारदजी द्वारा ब्रह्माजी की सृष्टि का वर्णन, ब्रह्माजी द्वारा नारदजी को वरदान | ३१ |
| ५. | दक्षयज्ञविध्वंस | ४१ |
| ६. | दक्ष से पहले सङ्कल्पजन्य, दर्शनजन्य तथा स्पर्शजन्य सृष्टि का वर्णन, दक्ष के पश्चात् मैथुनी सृष्टि का वर्णन, हर्यश्चों तथा शबलाश्चों को नारदजी के उपदेश से मोक्षमार्ग का अनुसरण, विश्वेदेव, वसुगण, रुद्र तथा आदित्यों की उत्पत्ति, दैत्यों की उत्पत्ति के प्रसङ्ग में बाणासुर का संक्षिप्त चरित्र, दानवों, गरुड तथा शुक आदि की उत्पत्ति का वर्णन | ४७ |
| ७. | ज्येष्ठपूर्णिमाव्रत, मरुद्गणों की उत्पत्ति, विभिन्न समुदाय के राजाओं तथा मन्वन्तरों का वर्णन | ५३ |
| ८. | पृथुचरित्र तथा सूर्यवंश का वर्णन | ६१ |
| ९. | पितृवंश का वर्णन, माया के व्यभिचार के कारण मत्स्ययोनिज सत्यवती का भूलोक में आना, पितृश्राद्ध विधि, अनुपनीततया विधुरों की साधारण श्राद्धविधि, शूद्र का अमन्त्रक श्राद्ध तथा आभ्युदयिक श्राद्ध का वर्णन | ७२ |
| १०. | एकोदिष्ट श्राद्ध विधि, वर्णों के अनुसार जननाशौच तथा शावाशौच (मरणाशौच) का निर्णय, अस्थि संचयनादि प्रेतकर्म, लेप भोगी तथा सपिण्ड पितृगण का निर्णय, ब्राह्मणों के भोजन करने से पितरों की तृप्ति विषयक शङ्का का समाधान, श्राद्ध विषयक कौशिक पुत्र की कथा | ८६ |
| ११. | श्राद्धयोग्य प्रशस्त स्थानों का वर्णन, सत्य, दया, इन्द्रिय, निग्रह, तथा शम आदि के तीर्थत्व का वर्णन तथा श्राद्ध के योग्य प्रशस्त काल का वर्णन | ९६ |
| १२. | चन्द्रवंश का वर्णन, चन्द्रमा के यज्ञ का वर्णन, चन्द्रमा द्वारा तारा का हरण, बृहस्पति के प्रार्थना करने पर भी चन्द्रमा ने जब तारा को नहीं लौटाया तो रुद्र के द्वारा युद्ध किए जाने के बाद चन्द्रमा का तारा को लौटाना, तारा के गर्भ से चन्द्रमा के पुत्र बुध की उत्पत्ति, बुध के पुत्र पुरुरवा की उत्पत्ति, पुरुरवा का चरित्र, पुरुरवा के वंश का वर्णन, बृहस्पति द्वारा रजि के पुत्र का मोहन, तथा कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) के नाम स्मरण का माहात्म्य | १०२ |

१३. क्रोष्टु के वंश का विस्तृत वर्णन, स्यमन्तक मणि का संक्षिप्त चरित्र, पाण्डवों की उत्पत्ति का वर्णन, कृष्ण जन्म का वर्णन, दैत्यों के उत्कर्ष के लिए शुक्राचार्य की तपस्या, ख्याति देवी का वध करने वाले विष्णु को भृगु महर्षि का शाप, जयन्ती द्वारा शुक्राचार्य की सेवा, बृहस्पति द्वारा दैत्यों का मोहन, शुक्र द्वारा दैत्यों को शाप, दैत्यों द्वारा त्रैलोक्य हरण का प्रयास ११३
१४. अर्जुन एवं कर्ण की उत्पत्ति, दोनों में वैर, शिवजी के द्वारा शिर काट दिए जाने से क्रुद्ध ब्रह्मा के पसीने से पाप पुरुष की उत्पत्ति, उससे भयभीत शिव का विष्णु के शरण में जाना, विरूपाक्ष के माँगने पर विष्णु द्वारा उसको अपनी दाहिनी भुजा का प्रदान, भुजा के कटने से उत्पन्न रक्त से भिक्षापात्र की पूर्ति, स्वेदज और रक्तज पुरुषों का परस्पर में युद्ध, विष्णु की आज्ञा से उन दोनों की सूर्य तथा शक्र द्वारा रक्षा और द्वार के अन्त में पृथा के गर्भ से उन दोनों की कर्ण तथा अर्जुन रूप से उत्पत्ति, ब्रह्मा की आज्ञा से शिवजी द्वारा विष्णु की स्तुति, शिवजी की तीर्थ यात्रा, पुष्कर में शिवजी द्वारा कापालिक व्रत, कापाल मोचन तीर्थ की उत्पत्ति, शङ्करजी का वाराणसी गमन १४२
१५. सुमेरु पर्वत पर वैराज भवन की कान्तिमती सभा में ब्रह्माजी के चिन्ता करने के पश्चात् पृथिवी पर जाकर ब्रह्माजी का वृक्षो को वर प्रदान करने के प्रसङ्ग में वहाँ पर निवास करने का वर्णन, विष्णु के साथ सभी देवों का पृथिवी पर जाना, ब्रह्माजी का देवताओं को उपदेश, पुष्कर तीर्थ की उत्पत्ति तथा वहाँ पर निवास विधि का वर्णन, तीन प्रकार की भक्तियों तथा पुष्कर तीर्थ में मरने तथा निवास करने का फल, ब्राह्मणों का लक्षण तथा आश्रम धर्म का वर्णन १५८
१६. ब्रह्मदेव कृत याग वर्णन, इन्द्र के द्वारा लायी गयी गोपकन्या गायत्री के साथ ब्रह्माजी का परिणय, ब्रह्माजी द्वारा एक हजार युग पर्यन्त यज्ञ किया जाना १८७
१७. ब्रह्माजी के यज्ञ में शिवजी का भिक्षार्थ आगमन, सदस्यों द्वारा शिवजी का उपहास और शिवजी द्वारा कपाल का प्रदर्शन, ब्रह्मा रुद्र संवाद, शिवजी द्वारा ब्राह्मणों को शाप, गोपकन्या के साथ यज्ञ करने वाले ब्रह्माजी की सावित्री द्वारा भर्त्सना, ब्रह्माजी का सावित्री से क्षमा माँगना, ब्रह्मा आदि देवताओं को सावित्री का शाप, सावित्री का पर्वत पर चला जाना, विष्णु कृत सावित्री स्तोत्र, सावित्री द्वारा विष्णु को वरदान, गायत्री द्वारा ब्रह्मव्रत का वर्णन, सावित्री प्रदत्त शाप का अच्छादन, गायत्री द्वारा सभी देवियों एवं देवताओं को वरदान, रुद्र कृत गायत्री स्तोत्र, गायत्री द्वारा रुद्र को वर प्रदान २०१
१८. ब्रह्माजी के यज्ञ का विस्तृत वर्णन, विष्णु तथा दानवों का वैर, पुष्कर स्नान के द्वारा ऋषियों को सुमुखत्व की प्राप्ति, प्राची सरस्वती का चरित्र, मंकण ब्राह्मण का चरित्र, प्राची सरस्वती का माहात्म्य, सरस्वती नदी द्वारा बाडवाग्नि को लेकर समुद्र में जाकर अन्तर्धान होना तथा पुष्कर में जाना पुष्कर क्षेत्र के खर्जूरी वन में सरस्वती की उत्पत्ति, प्रभञ्जनराज की कथा, सरस्वती नदी में स्नान तथा दान करने का माहात्म्य २२४
१९. ऋषियों द्वारा यज्ञोपवीत से नाप कर तीर्थों का विभाग, ब्राह्मणों तथा ऋषियों को वरदान, पुष्कर क्षेत्र का माहात्म्य, पुष्कर में ब्रह्मर्षियों के आश्रम आदि का वर्णन, अगस्त्य महर्षि के प्रभाव का वर्णन, वृत्रासुर के वध की कथा, देवताओं की ऋषि दधीचि से प्रार्थना, दधीचि ऋषि की हड्डी से वज्र का निर्माण, इन्द्र द्वारा वज्र से वृत्रासुर का वध, इन्द्र का सरोवर में प्रवेश, देवताओं से भयभीत कालेय असुरों का समुद्र में प्रवेश, कालेय कृत उपद्रवों का वर्णन, देवताओं द्वारा भगवान् विष्णु की स्तुति, भगवान् विष्णु की आज्ञा से देवताओं द्वारा आगस्त्य महर्षि के आश्रम में जाकर उनकी स्तुति, अगस्त्य महर्षि द्वारा विन्ध्यगिरि को झुकाया जाना, अगस्त्य महर्षि का

समुद्र को पीना, देवताओं द्वारा कालेय का वध, ब्रह्माजी की आज्ञा से भागीरथी द्वारा समुद्र को भरना, पुष्कर क्षेत्र में श्राद्ध इत्यादि की विधि, अवर्षण तथा दुर्गिक्ष से त्रस्त ऋषियों द्वारा मरे हुए कुमारों के शरीर को पकाने पर उनका राजा से संवाद, दान लेने के दोष, शान्ति प्रशंसा, द्रव्यों के संग्रह तथा तृष्णा के दोष, सन्तोष की प्रशंसा, काम दोष का वर्णन, दान न लेने का फल, भूखों की अवस्था का वर्णन, अन्न की प्रशंसा, अन्नदान की प्रशंसा, दम आदि का वर्णन, शान्त के लक्षण, शान्ति तथा क्षमा की प्रशंसा और मध्यपुष्कर का माहात्म्य वर्णन

२५८

२०. मध्यपुष्कर का माहात्म्य, पुष्पवाहन राजा की कथा, विभूति द्वादशी इत्यादि साठ व्रतों का वर्णन तथा स्नान एवं तर्पण विधि

२८६

२१. धर्ममूर्तिराज का वर्णन, धान्यपर्वत आदि की दान विधि, विशोक द्वादशी व्रत, गुड आदि से निर्मित दश प्रकार के गावों के दान का वर्णन, धान्य आदि दश प्रकार के पर्वतों का वर्णन तथा सौर धर्म वर्णन

३००

२२. भूलोक आदि सातो लोकों के स्वामित्व प्राप्ति के उपाय का वर्णन, समुद्र को सुखा देने के लिए इन्द्र की आज्ञा का पालन नहीं करने पर अग्नि तथा मारुत को इन्द्र का शाप और उन दोनों का पृथिवी पर जन्म, अगस्त्य महर्षि का चरित्र, अगस्त्य को अर्घ्य देने की विधि का वर्णन, शिवजी द्वारा पार्वतीजी को गौरी तृतीया व्रत का उपदेश, रुद्र का आश्वासन प्राप्त करके गौरी का ब्रह्माजी के यज्ञ में जाना, भगवान् विष्णु का रुद्र को अपने व्रत के ख्यापन का आदेश तथा सारस्वत व्रत का विधान वर्णन

३२५

२३. वैष्णव धर्म का वर्णन, भीम द्वारा वैष्णव धर्म का प्रवर्तन, माघ शुक्ल पक्ष में होने वाली भीमद्वादशीव्रत का विधान, वर्णाश्रमों की उत्पत्ति, वेश्या व्रत का विधान और उसका विस्तृत वर्णन

३४०

२४. अशून्यशयन व्रत का वर्णन, अङ्गारक चतुर्थी व्रत, वीरभद्र को मङ्गलग्रहत्व की प्राप्ति

३५०

२५. आदित्य शयन विधान व्रत तथा उमा महेश्वर पूजन प्रकार

३५५

२६. रोहिणी चन्द्रशयन व्रत का विधान

३५९

२७. तडाग प्रतिष्ठा, वृक्षारोपणप्रतिष्ठा, वापीप्रतिष्ठा, कूपप्रतिष्ठा तथा सरोवरप्रतिष्ठा का वर्णन

३६२

२८. वृक्षारोपण विधि का वर्णन, अश्वत्थ आदि वृक्षों के रोपने के फलों का पृथक्-पृथक् वर्णन

३६७

२९. सौभाग्यशयनव्रत का विधान, सौभाग्याष्टकोत्पत्ति वर्णन, कलिसाधन विधि वर्णन

३६९

३०. वामनावतार चरित्र वर्णन, वामन का शक्र के साथ वाष्कलि की नगरी में जाना, वामन के द्वारा तीन पद्मभूमि की याचना, वामन द्वारा वाष्कलि की प्रवचना

३७४

३१. नागतीर्थ का वर्णन, जनमेजय सर्पों को भस्म कर देंगे इस तरह से ब्रह्माजी का सर्पों को शाप; सर्पों की प्रार्थना से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी का उच्छापन करना कि जरत्कारु के पुत्र आस्तिक द्वारा सर्पों की रक्षा हो जायेगी, नागतीर्थ की उत्पत्ति का वर्णन, श्रावणशुक्ल पञ्चमी तिथि को नागतीर्थ में श्राद्ध आदि करने का माहात्म्य, शिवदूती का चरित्र वर्णन, रुरु दैत्य से भयभीत देवताओं का नीलगिरि पर जाकर देवी की प्रार्थना करना, देवी के मुख से अन्य देवियों की उत्पत्ति, देवीगण और दैत्यगण का युद्ध, शिवकृत शिवदूती स्तोत्र, शिवदूति द्वारा शिव को वर प्रदान और स्तोत्र महिमा

३८९

३२. प्रेतपंचक की कथा, अन्तरिक्ष स्थित पुष्कर के पृथिवी पर आने का वृत्तान्त वर्णन, कार्तिक पूर्णिमा को पुष्कर में स्नानादि का माहात्म्य, सरस्वती के पाँच स्रोतों का वर्णन

४००

अध्याय

विषय

पृष्ठ

३३. मार्कण्डेय महर्षि की उत्पत्ति का वर्णन, उनके आश्रम का वर्णन, श्रीरामचन्द्रजी का महर्षि मार्कण्डेय से समागम, मार्कण्डेय आश्रम में श्रीरामचन्द्रजी का स्वप्न में महाराज दशरथ का दर्शन, श्रीरामजी द्वारा वहाँ श्राद्ध, महाराज दशरथ को वहाँ प्रत्यक्ष देखकर सीताजी को लज्जा, श्रीरामजी का ज्येष्ठ पुष्कर में एक मास तक निवास, श्रीरामजी द्वारा अजगन्ध शिव का दर्शन, अजगन्ध शिव द्वारा श्रीरामजी की प्रशंसा ४१२
३४. ब्रह्माजी के यज्ञ के काल आदि का वर्णन, ब्रह्माजी की आज्ञा से लक्ष्मी सहित विष्णु के द्वारा सावित्री को मनाना, गौरी के साथ शिवजी द्वारा सावित्री देवी की प्रार्थना, सावित्री का ब्रह्माजी के पास आना, गायत्री और सावित्री का संवाद, यज्ञान्त स्नान के द्वारा ब्रह्माजी का सभी देवताओं को वरदान, विष्णुकृत ब्रह्म स्तुति, रुद्र कृत ब्रह्म स्तुति, ब्रह्मा द्वारा अपने निवास स्थान का वर्णन, ब्रह्माजी के स्थान का माहात्म्य, पुष्कर आदि तीर्थों में अनेक प्रकार के दानों की महिमा, पुष्कर तीर्थ में दीक्षा इत्यादि की विस्तृत विधि, ग्रहों के अनुकूल बनाने की विधि का वर्णन तथा श्वेतराजा की कथा ४२६
३५. अन्नदान का माहात्म्य, श्रीराम कथा, अगस्त्य आदि ऋषियों द्वारा रामराज्य की प्रशंसा तथा श्रीराम द्वारा शम्बूक नामक तपस्वी शूद्र का वध करके ब्राह्मण बालक को जीवित करना ४५७
३६. श्रीरामचन्द्रजी का अगस्त्य आश्रम में जाना, रामागस्त्य संवाद, अक्षयराज की कथा, महर्षि अगस्त्य के द्वारा प्रदत्त आभरण को श्रीरामचन्द्रजी का लेना, श्वेतराज की कथा ४६४
३७. दण्डकारण्य की उत्पत्ति और राजा दण्ड की कथा, गृध्र एवं उल्लू के परस्पर में गृह के विषय में विवाद होने पर श्रीराम द्वारा निर्णय, गृध्र के पूर्वजन्म की कथा, श्रीरामचन्द्रजी के द्वारा राजसूय यज्ञ का विचार होने पर भरतजी द्वारा सयौतिक उसका निषेध, कान्यकुब्ज में श्रीराम द्वारा वामन की स्थापना की प्रतिज्ञा ४७३
३८. विभीषण का वृत्तान्त जानने के लिए श्रीरामचन्द्रजी का भरतजी के साथ दक्षिणापथ में प्रस्थान, श्रीरामजी का वनवास काल में अपने निवास स्थानों को भरतजी को दिखाना, किष्किन्धा में सुग्रीव आदि से भेंट, वहाँ से सुग्रीव को लेकर लङ्का जाना, विभीषण से भेंट, केकसी राम संवाद, विभीषण का श्रीराम को वामन की मूर्ति समर्पित करना, सेतुभङ्ग, श्रीरामकृत रामेश्वर स्तुति, पुष्कर में श्रीराम द्वारा ब्रह्माजी की स्तुति, ब्रह्मा और राम का संवाद, श्रीराम का मथुरा गमन, वामन भगवान् की प्रतिष्ठा ४८४
३९. भीष्म का भगवान् विष्णु की नाभि से कमल की उत्पत्ति विषयक प्रश्न, पुलस्त्य महर्षि द्वारा सृष्टि वर्णन के प्रसङ्ग में युगों तथा युग सन्धि आदि का एवं युगधर्म का वर्णन, भगवान् के मुख में प्रविष्ट मार्कण्डेय महर्षि द्वारा भगवान् के उदर में प्रपंच का दर्शन, परमेश्वर से पद्म की उत्पत्ति ४९८
४०. कमल से ब्रह्माजी की उत्पत्ति का वर्णन, कमल के पृथिवी रूप से वर्णन पूर्वक कमल के केसरों का सुमेरु आदि रूप से वर्णन, कमल दल के अनुसार देशों का वर्णन, मधु कैटभ की कथा, ब्रह्माजी से प्रजापतियों की उत्पत्ति का वर्णन, तारकामय संग्राम का वर्णन ५०९
४१. देवसेना के दैत्य सेना के साथ युद्ध करते समय उर्व के ऊरुभाग से और्वानल की उत्पत्ति का वर्णन, कालनेमि का वध, ब्रह्माजी द्वारा भगवान् विष्णु की स्तुति, भगवान् द्वारा देवताओं को वरदान ५२३
४२. शङ्करजी का माहात्म्य वर्णन, दिति के पुत्र वज्राङ्ग की उत्पत्ति, वज्राङ्ग द्वारा इन्द्र को बन्दी बनाकर

अध्याय

विषय

पृष्ठ

- उनको दिति के पासा लाना, ब्रह्म तथा कश्यप की आज्ञा से इन्द्र को मुक्त करना, ब्रह्माजी द्वारा वराङ्गी को वज्राङ्ग की पत्नी के रूप में प्रदान, वज्राङ्ग तथा वराङ्गी की तपस्या, ब्रह्माजी द्वारा वज्राङ्ग को वरदान, तारकासुर की उत्पत्ति और उसकी तपस्या, ब्रह्माजी द्वारा तारकासुर को वरदान, तारकासुर का इन्द्र के साथ युद्ध तथा देवताओं की पराजय ५४४
४३. सभी देवताओं द्वारा ब्रह्माजी की स्तुति, शङ्कर का पुत्र तारकासुर का वध करेगा, यह ब्रह्माजी का कहना, रात्रि देवी को ब्रह्माजी का वरदान, हिमाचल की पत्नी मेना के गर्भ से पार्वती के जन्म का वर्णन, नारदजी द्वारा पार्वतीजी के सामुद्रिक लक्षणों का वर्णन, शङ्करजी का कामदेव को भस्म करना, रतिकृत शङ्करजी की स्तुति, सप्तर्षि पार्वती संवाद, मैं शङ्करजी को ही पति बनाऊँगी यह पार्वती का सप्तर्षियों को कहना, शिव पार्वती विवाह, गणेशजी का वर्णन, वीरक को पार्वतीजी द्वारा अपना पुत्र बनाना, ब्रह्माजी की आज्ञा से पार्वती के शरीर में रात्रि का प्रवेश, पार्वती का काला होना ५५३
४४. श्यामवर्ण की पार्वतीजी से भगवान् शिव का मनोविनोद, पार्वतीजी की तपस्या, ब्रह्माजी के वरदान से पार्वतीजी को गौरित्व की प्राप्ति, स्कन्द का जन्म, स्कन्द तारकासुर युद्ध और स्कन्द द्वारा तारकासुर का वध ५९३
४५. नृसिंहावतार का वर्णन और हिरण्यकशिपुवध का वर्णन ६०९
४६. अन्धकासुर की कथा, शङ्करजी तथा अन्धकासुर का युद्ध, शिवजी द्वारा आदित्य की स्तुति, अन्धकासुर द्वारा शिवजी की स्तुति, ब्रह्माजी द्वारा ब्राह्मणों का प्राशास्त्य वर्णन, गायत्री का माहात्म्य वर्णन और गायत्री न्यास विधि का वर्णन ६२३
४७. षड्विध स्नान वर्णन, ब्राह्मण पुत्र की कथा का वर्णन, गरुड की कथा, कश्यप गरुड संवाद, इन्द्र द्वारा कद्रु पुत्र सर्पों के सन्निकट से अमृत का हरण ६४०
४८. महर्षि कश्यप के उपदेश से चाण्डाल पतित ब्राह्मण को सदाचार पालन करने से स्वर्ग की प्राप्ति, ब्राह्मण को पीडित करने से अनेक प्रकार के दुःखों की प्राप्ति का वर्णन, ब्राह्मणों की उपजीव्यवृत्ति का वर्णन, सत्य की प्रशंसा, गौ का माहात्म्य तथा कपिला गौ के दान इत्यादि की विधि ६५४
४९. ब्रह्मतेज को बढाने वाले नित्य कर्मों का वर्णन, तर्पण विधि का वर्णन, सदाचार वर्णन, धर्मबीज एवं पापबीज समुद्भूत मनुष्य का लक्षण ६६९
५०. पितृसेवा की प्रशंसा, मूकाख्यान, पिता के अनदर से होने वाले पापों का वर्णन, पतिव्रता का लक्षण, मित्र से द्रोह न करने की प्रशंसा, पुत्र के कर्तव्य का निरूपण, पिता की पूजा करने का माहात्म्य, चूड़ामणि योग का वर्णन, श्राद्ध की प्रशंसा और श्राद्ध करने में असमर्थ के कर्तव्य का वर्णन ६७९
५१. पतिव्रता का माहात्म्य वर्णन, पतिव्रता सौम्या द्वारा पति की सेवा का वर्णन और माण्डव्यमुनि की कथा ७०४
५२. महर्षि माण्डव्य के शूलारोपण के कारण का वर्णन, दूसरे की पत्नी का बलपूर्वक हरण करने वाले के पाप का वर्णन, साध्वी स्त्रियों के माहात्म्य का वर्णन, अपात्र वर को कन्यादान करने से होने वाले पाप का वर्णन ७११
५३. तुलाधार वैश्य का चरित, सत्य की प्रशंसा, निर्लोभत्व की प्रशंसा, और निर्लोभ शूद्र का वर्णन ७१९
५४. काम के दुर्जयत्व का वर्णन, अहल्या तथा इन्द्र का चरित्र ७२६
५५. काम का दुर्जयत्व वर्णन, परमहंस चरित्र तथा लौहित्य की उत्पत्ति का वर्णन ७३०

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|---|-------|
| ५६. | गन्धर्वों आदि की स्त्रियों के साथ शिवजी की क्रीडा का वर्णन, क्षेमङ्कारी की कथा, पञ्चाख्यान की समाप्ति | ७३५ |
| ५७. | जलाशयदान का माहात्म्य, धनिक सुत की कथा | ७३८ |
| ५८. | अश्वत्थ आदि वृक्षों को रोपने की विधि तथा फल का वर्णन, प्याऊ दान की विधि, और घर्मघट दान विधि का वर्णन | ७४२ |
| ५९. | सेतु बन्धन (पुल बनाने) का फल वर्णन, कीचड़ आदि पार करने के लिए पाषाण आदि से मार्ग बनाने का फल वर्णन, चोर की कथा, अनेक प्रकार के दानों का माहात्म्य, रुद्राक्ष का माहात्म्य, रुद्राक्ष धारण विधि, रुद्राक्ष धारण का माहात्म्य | ७४६ |
| ६०. | धारी (आँवले) का माहात्म्य, प्रेतों की कथा तथा तुलसी का माहात्म्य वर्णन | ७६२ |
| ६१. | तुलसीस्तोत्र तथा उसका माहात्म्य वर्णन | ७७३ |
| ६२. | गङ्गामाहात्म्य तथा गङ्गाजी में स्नान आदि की विधि | ७७६ |
| ६३. | गणेशजी की अग्रपूज्यता का वर्णन, पार्वतीजी के प्रेम की कथा | ७८५ |
| ६४. | गणेश स्तोत्र | ७८८ |
| ६५. | नान्दीमुख आदि में गणेशजी की अग्र पूजा का वर्णन, गणेशजी द्वारा देवताओं को वरदान, भगवान् विष्णु की आज्ञा से देवताओं का असुरों के साथ युद्ध, चित्ररथ द्वारा कालकेय का वध वर्णन | ७८९ |
| ६६. | जयन्त के द्वारा कालेय का वध | ७९९ |
| ६७. | इन्द्र के द्वारा बल और नमुचि का वध | ८०० |
| ६८. | इन्द्र के द्वारा मुचि का वध | ८०४ |
| ६९. | तारेय वध | ८०५ |
| ७०. | देवान्तक, दुर्धर्ष तथा दुर्मुख का वध | ८०६ |
| ७१. | इन्द्र द्वारा दूसरे नमुचि का वध | ८०८ |
| ७२. | भगवान् विष्णु द्वारा मधु का वध | ८११ |
| ७३. | इन्द्र के द्वारा वृत्रासुर का वध वर्णन | ८१४ |
| ७४. | त्रिपुरासुर के पुत्र का वध वर्णन | ८१६ |
| ७५. | देवताओं और दानवों का परस्पर युद्ध और हिरण्याक्ष वध | ८२० |
| ७६. | युद्ध में मरे हुए दैत्यों की उत्तम गति की प्राप्ति का वर्णन, मनुष्य योनि में उत्पन्न दैत्यों के स्वाभाविक दैत्यत्व का वर्णन, दैत्यवंशीय प्रह्लाद आदि को भी देवत्व की प्राप्ति का वर्णन, एक वैष्णव पुत्र की कथा, मनुष्यों में उत्पन्न देवों तथा दैत्यों का लक्षण | ८२७ |
| ७७. | सूर्य का माहात्म्य वर्णन, सङ्क्रान्ति आदि के पर्व पर दान देने की विधि, अर्कसप्तमी व्रत के विधान का वर्णन | ८३८ |
| ७८. | सूर्य के अनेक व्रतों का वर्णन, सूर्य शान्ति का विधान वर्णन | ८४६ |
| ७९. | भद्रेश्वर नामक मध्य देश के राजा की कथा | ८५१ |
| ८०. | सूर्यपूजा विधि का वर्णन तथा चन्द्रपूजा विधि का वर्णन | ८५४ |
| ८१. | भौम की उत्पत्ति तथा भौम की पूजा का वर्णन | ८५७ |
| ८२. | पुराणावतार वर्णन तथा सभी ग्रहों की पूजा का वर्णन | ८६१ |



॥ श्रीः ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
592
❦

श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितं

श्रीपद्ममहापुराणम्

हिन्दीटीका-अकारादिश्लोकानुक्रमणी सहित

(द्वितीय भाग : भूमि खण्ड)

सम्पादक एवं टीकाकार
आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी
(श्रीधराचार्य)



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रम

२. भूमिखण्ड

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|---|-------|
| १. | ऋषियों का सूतजी से प्रह्लाद के चरित्र के विषय में प्रश्न और शिवशर्मा चरित का प्रारम्भ | ८६५ |
| २. | शिवशर्मा के तृतीय पुत्र द्वारा मरे हुए वेदशर्मा को जिलाया जाना | ८७० |
| ३. | इन्द्रलोक जाते हुए शिवशर्मा के चतुर्थ पुत्र विष्णुशर्मा के मार्ग में मेनका द्वारा विघ्न | ८७२ |
| ४. | शिवशर्मा द्वारा अपने सबसे छोटे पुत्र के सत्त्व की परीक्षा | ८७७ |
| ५. | दैत्य के भय से मरे हुए सोमशर्मा का प्रह्लाद के रूप में जन्म | ८८२ |
| ६. | इन्द्र के स्वाराज्य ऐश्वर्य को देखकर दनु का दुःखी होना | ८९० |
| ७. | कश्यप महर्षि द्वारा दिति को ज्ञानोपदेश | ८९३ |
| ८. | देह के दुःख से उद्विग्न आत्मा का वैराग्य के साथ समागम | ९०० |
| ९. | ध्यान को अपनाने से आत्मा के देह के बन्धन से मुक्तिपूर्वक स्वरूप ज्ञान का वर्णन | ९०९ |
| १०. | हिरण्यकशिपु आदि दैत्यों का अपने पिता के समक्ष अपने कष्ट को बतलाना | ९१० |
| ११. | सुव्रत चरित्र का वर्णन | ९१४ |
| १२. | ऋण सम्बन्धी पुत्र का लक्षण | ९१८ |
| १३. | ब्रह्मचर्य आदि के लक्षण का वर्णन | ९२८ |
| १४. | सुमना द्वारा अपने वृत्तान्त का वर्णन | ९३१ |
| १५. | पापियों की मृत्यु का लक्षण | ९३५ |
| १६. | मृत्यु के पश्चात् पापियों को प्राप्त होने वाली अनेक प्रकार की योनियों का वर्णन | ९३६ |
| १७. | सुमनोपदेश से प्रेरित सोमशर्मा का महर्षि वशिष्ठ के यहाँ जाना | ९३८ |
| १८. | सोमशर्मा के ब्राह्मणत्व की प्राप्ति के कारण का वर्णन | ९४३ |
| १९. | सुमना के साथ सोमशर्मा का रेवा नदी के तट पर कपिलासंगम तीर्थ में तपस्या करना | ९४६ |
| २०. | श्रीहरि द्वारा सोमशर्मा को वंश तारक पुत्र का वरदान | ९५१ |
| २१. | सुव्रत चरित | ९५६ |
| २२. | सुव्रत के पूर्वजन्म का चरित्र वर्णन | ९५९ |
| २३. | सृष्टि तथा संहार के कारण का वर्णन | ९६३ |
| २४. | वृत्रासुर की उत्पत्ति का वर्णन | ९६६ |
| २५. | रम्भा में आसक्त वृत्रासुर का रम्भा के आग्रह से मोहित होकर मदिरा पीना और मारा जाना | ९७० |
| २६. | दूसरा वेष बनाकर इन्द्र का दिति की सेवा करना | ९७२ |
| २७. | पृथु के द्वारा सभी वर्णों के राजा पद पर राजाओं की स्थापना | ९७५ |
| २८. | पृथु चरित्र का वर्णन | ९७७ |
| २९. | महाराज पृथु की पृथिवी के प्रति उक्ति | ९८५ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|--|-------|
| ३०. | वेन का विस्तार पूर्वक चरित्र वर्णन | ९९२ |
| ३१. | महर्षि अत्रि के उपदेश से इन्द्र के समान पुत्र प्राप्त करने के लिए अङ्ग का तपस्या करने के लिए जाना | ९९८ |
| ३२. | महाराज अङ्ग की तपस्या से प्रकट हुए भगवान् वासुदेव की अङ्ग कृत स्तुति | १००० |
| ३३. | सुनीथा चरित्र | १००६ |
| ३४. | सुनीथा द्वारा सखियों के समक्ष अपने पाप का प्रकाशन | १००९ |
| ३५. | रम्भा के मुख से अङ्ग के वृत्तान्त को सुनकर सुनीथा का उनको प्राप्त करने का निश्चय | १०१३ |
| ३६. | सुनीथा द्वारा गीत के प्रभाव से अङ्ग को वश में करना | १०१४ |
| ३७. | छद्मलिङ्गधारी पुरुष के साथ वेन का संवाद | १०१९ |
| ३८. | वेन द्वारा वैदिक धर्म कर्म का परित्याग | १०२४ |
| ३९. | रेवा नदी के तट पर वेन का तपस्या करना | १०२७ |
| ४०. | नित्य तथा नैमित्तिक दानों के फल का वर्णन | १०३७ |
| ४१. | सुकला के पातिव्रत्य चरित्र का वर्णन | १०४० |
| ४२. | सुदेवा के चरित्र का वर्णन | १०४७ |
| ४३. | सुमेरु पर्वत पर मनुपुत्र के सैनिकों के साथ शूकर के युद्ध का वर्णन | १०५३ |
| ४४. | शूकर के साथ इक्ष्वाकु का युद्ध | १०६० |
| ४५. | इक्ष्वाकु के सैनिकों के साथ शूकरी का युद्ध | १०६१ |
| ४६. | श्वास लेती हुयी शूकरी के मुख का सुदेवा द्वारा सींचा जाना | १०६४ |
| ४७. | शूकरी द्वारा अपने पूर्व जन्म के चरित्र का वर्णन | १०६९ |
| ४८. | राजा उग्रसेन की पत्नी पद्मावती के चरित्र का वर्णन | १०७३ |
| ४९. | पद्मावती के चरित्र का वर्णन | १०७५ |
| ५०. | गोभिल दैत्य द्वारा धर्म वर्णन पुरस्सर पद्मावती को पुंश्चली सिद्ध करना | १०८० |
| ५१. | वसुदत्त द्वारा अपनी पुत्री सुदेवा का परित्याग | १०८५ |
| ५२. | अपनी सौत मङ्गला के पातिव्रत्य को देखकर सुदेवा की मृत्यु और शूकरी होना, और इक्ष्वाकु की पत्नी से एक वर्ष का पुण्य प्राप्त करके उसका स्वर्गरोहण करना | १०८९ |
| ५३. | सुकला के पातिव्रत्य भङ्गार्थ दूती के सारे प्रयासों का विफल होना | १०९२ |
| ५४. | सुकला तथा इन्द्र की दूती का संवाद | ११०१ |
| ५५. | कामदेव का सुकला को मोहित करने के लिए इन्द्र तथा अपने सहायकों के साथ प्रस्थान | ११०३ |
| ५६. | सुकला के विषय में धर्म और सत्य का परस्पर में संवाद तथा काम की दुष्टता का वर्णन | ११०६ |
| ५७. | क्रीड़ा द्वारा सुकला को मायामय वन में लाया जाना और काम द्वारा उसको मोहित करने के लिए प्रयास किया जाना | ११०९ |
| ५८. | काम और इन्द्र का सुकला से पराजित होना | १११३ |
| ५९. | धर्मराज द्वारा भार्यातीर्थ का वर्णन | १११६ |
| ६०. | पतिव्रता पत्नी के साथ ही पुण्यकर्म करना चाहिए | १११९ |
| ६१. | पिप्पल की तीन हजार वर्ष की तपस्या, पिप्पल का विद्याधरत्व की प्राप्ति, सारस द्वारा पिप्पल को कुण्डल पुत्र सुकर्मा के पास भेजा जाना | ११२२ |
| ६२. | सुकर्मा पिप्पल संवाद, अर्वाचीन तथा पराचीन गति ज्ञान का वर्णन | ११२७ |
| ६३. | मातृपितृ तीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ११३४ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|---|-------|
| ६४. | मातृ पितृ तीर्थ वर्णन के प्रसङ्ग में नहुष तथा ययाति के चरित्र का वर्णन | ११३६ |
| ६५. | मातलि द्वारा शरीर के दोष का वर्णन | ११४३ |
| ६६. | शरीरोत्पत्ति पूर्वक शरीर की हेयता का वर्णन | ११४४ |
| ६७. | मनुष्य कृत पाप कर्मों के परिणाम का वर्णन | ११६२ |
| ६८. | पुण्य कर्मों के फलों का वर्णन | ११७१ |
| ६९. | अनेक प्रकार के शिवधर्म का वर्णन | ११७३ |
| ७०. | अत्यन्त भयङ्कर यमलोक में प्राप्त होने वाली पीड़ाओं का वर्णन | ११७६ |
| ७१. | देवलोक के संस्थानों का वर्णन | ११७७ |
| ७२. | ययाति द्वारा शरीर की प्रशंसा और स्वर्ग लोक में जाने से इनकार और मातलि का इन्द्र के पास जाना | ११८० |
| ७३. | ययाति द्वारा अपने राज्य में विष्णु सेवा की अनिवार्यता की घोषणा | ११८२ |
| ७४. | राजा की आज्ञा सुनकर लोगों का भागवत धर्म स्वीकार करना | ११८५ |
| ७५. | वैष्णव धर्म का पालन करने से ययाति का सदा तरुण बने रहना और उनकी प्रजाओं का रोग तथा मृत्यु से रहित होना | ११८७ |
| ७६. | धर्म की इन्द्र से प्रार्थना इन्द्र द्वारा ययाति को स्वर्ग लाने के लिए प्रयास किया जाना | ११९० |
| ७७. | नृत्यगीत परायण राजा के शरीर में अशौच के कारण जरा का प्रवेश, ययाति का आखेट के लिए किसी सरोवर के तट पर जाना, ययाति का विशाला के मुख से अश्रु विन्दुमती का चरित्र सुनना, ययाति को विशाला द्वारा बतलाया जाना कि उनके शरीर में जरात्व आ गया है | ११९३ |
| ७८. | आज्ञा भङ्ग करने वाले अपने तीन पुत्रों को शाप देकर तथा पुरु से उसकी जवानी को प्राप्त करके ययाति का अश्रुविन्दुमती के पास जाना | १२०२ |
| ७९. | ययाति का अश्रुविन्दुमती के साथ गान्धर्व विधि से विवाह करना | १२०७ |
| ८०. | शर्मिष्ठा और देवयानी के व्यवहार का वर्णन | १२१० |
| ८१. | इन्द्र की आज्ञा से मेनका का अश्रुविन्दुमती के पास जाना | १२१२ |
| ८२. | अश्रुविन्दुमती के स्वर्ग जाने का आग्रह देखकर राजा ययाति का पुरु को राज्य देकर उन्हें उनकी जवानी को लौटाना और अपनी बुढ़ापा को लेना | १२१८ |
| ८३. | पितृतीर्थ का माहात्म्य वर्णन | १२२७ |
| ८४. | गुरुतीर्थ के माहात्म्य वर्णन के प्रसङ्ग में च्यवन चरित्र का वर्णन | १२२९ |
| ८५. | कुञ्जल द्वारा दिव्यादेवी के पूर्वजन्म के पापों का वर्णन तथा दिव्या देवी के वर को जीवित रहने के लिए | |
| ८६. | भगवद् ध्यान का वर्णन | १२३५ |
| ८७. | अशून्य शयन व्रत का वर्णन | १२४२ |
| ८८. | प्लक्ष द्वीप में जाकर उज्ज्वल द्वारा दिव्यादेवी को व्रत और स्तोत्र का उपदेश | १२४६ |
| ८९. | समुज्ज्वल द्वारा नर्मदा के तट पर कृष्ण हंसों की कथा का वर्णन | १२५० |
| ९०. | कुञ्जल द्वारा कृष्ण हंसों की कथा का विस्तार से वर्णन | १२५५ |
| ९१. | ब्रह्म हत्या अग्न्याग्न्य दोष से दूषित इन्द्र का वाराणसी आदि तीर्थों में स्नान और | १२५९ |
| ९२. | किसी सिद्ध के उपदेश से उपयुक्त चारों पापियों का वाराणसी आदि तीर्थों में जाना और स्नान करने से मुक्ति रेवा तथा कुब्जा के सङ्क्रम का माहात्म्य | १२६२ |
| ९३. | आनन्द वन में राजा सुबाहु का अपनी पत्नी के साथ अपने शव का मांस खाना | १२६५ |
| ९४. | कर्म की महिमा का वर्णन तथा जैमिनि द्वारा दान धर्म का वर्णन | १२६९ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|--|-------|
| ९५. | स्वर्ग के गुणों का वर्णन तथा दान धर्म की श्रेष्ठता का वर्णन | १२७४ |
| ९६. | नरकगामी तथा स्वर्गगामी जीवों का वर्णन | १२७७ |
| ९७. | तपस्या के प्रभाव से राजा सुबाहु का विष्णुलोक में जाने पर भी भगवान् विष्णु का दर्शन नहीं होना | १२८१ |
| ९८. | विज्ज्वल का सपत्नीक राजा सुबाहु को वासुदेव महास्तोत्र को सुनाना | १२९० |
| ९९. | सविधि वासुदेव स्तोत्र का वर्णन और उसके फल का वर्णन | १२९८ |
| १००. | वासुदेव स्तोत्र की महिमा का वर्णन | १३०३ |
| १०१. | कैलास पर्वत की शोभा का वर्णन मुनि वेषधारी पुरुष के द्वारा शिवार्चन का वर्णन | १३०४ |
| १०२. | पार्वतीजी के दोहद को पूरा करने के लिए गणों तथा पार्वतीजी के साथ शङ्करजी का नन्दन वन में जाना | १३०८ |
| १०३. | अशोक सुन्दरी का उपाख्यान, हुंड का अशोक सुन्दरी को देखकर कार्मात होना हुंड के वध के लिए अशोक सुन्दरी की तपस्या, राजा आयु को दत्तात्रेय का वरदान | १३१५ |
| १०४. | इन्दुमती के गर्भ का वर्णन | १३२६ |
| १०५. | हुण्ड द्वारा नवप्रसूत बालक नहुष का अपहरण | १३२८ |
| १०६. | राजा आयुष का इन्दुमती के साथ अपने पुत्र के वियोग में विलाप | १३३४ |
| १०७. | नारदजी का आयुष को नहुष की स्थिति का वर्णन | १३३६ |
| १०८. | महर्षि वसिष्ठ द्वारा अशोकसुन्दरी की तपस्या का वर्णन | १३३७ |
| १०९. | विद्वर नामक कित्रर का अशोक सुन्दरी को नहुष की स्थिति को बतलाना | १३४० |
| ११०. | नहुष का हुंड को मारने के लिए हुंड के नगर में जाना | १३४५ |
| १११. | युद्ध के लिए उद्यत नहुष का देव स्त्रियों द्वारा सम्मान | १३४८ |
| ११२. | नहुष के प्रति अशोक सुन्दरी का आकृष्ट होकर उनको देखना | १३४९ |
| ११३. | रम्मा और अशोक सुन्दरी का नहुष के विषय में वार्तालाप | १३५० |
| ११४. | हुण्ड के दूत का नहुष के साथ वार्तालाप | १३५४ |
| ११५. | हुण्ड और नहुष का परस्पर में युद्ध | १३५७ |
| ११६. | रम्मा के साथ अशोक सुन्दरी का नहुष के पास आना, अशोक सुन्दरी और नहुष का विवाह, मेनिका का रानी इन्दुमती को सपत्नीक नहुष के आने की सूचना देना | १३६१ |
| ११७. | नहुष को देखकर उनके माता-पिता का प्रसन्न होना | १३६३ |
| ११८. | हुण्ड के पुत्र विहण्ड की तपस्या | १३६६ |
| ११९. | कामोदा कथानक का वर्णन, नारदजी का विहण्ड को प्रमित करना | १३७० |
| १२०. | नारदजी द्वारा कामोदा के स्वप्न का विचार शरीरात्मा तत्त्व का वर्णन | १३७३ |
| १२१. | नारदजी को कामोदा को शोकन्वित करना, कामोदा की आँसुओं से निर्गन्ध पुष्पों की उत्पत्ति | १३७७ |
| १२२. | कुञ्जल द्वारा विद्याधर के वंश का वर्णन | १३८२ |
| १२३. | धर्मशर्मा को सिद्ध से ज्ञान की प्राप्ति, धर्मशर्मा के शुक योनि की प्राप्ति का वर्णन | १३८६ |
| १२४. | महाराज वेन की आज्ञा स्वीकार करके पृथु का तपस्या करने के लिए वन जाना | १३९१ |
| १२५. | वेन का विष्णुलोक में जाना तथा भूमिखण्ड का फलश्रुति | १३९३ |



॥ श्रीः ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
592
—

श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितं

श्रीपद्ममहापुराणम्

हिन्दीटीका-अकारादिश्लोकानुक्रमणी सहित

(तृतीय भाग : स्वर्ग एवं ब्रह्म खण्ड)

सम्पादक एवं टीकाकार
आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी
(श्रीधराचार्य)



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रम

३. स्वर्गखण्ड

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|---|-------|
| १. | स्वर्गखण्ड के विषय में शौनकादि ऋषियों का प्रश्न | १३९८ |
| २. | अव्याकृत ब्रह्म से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का वर्णन | १४०१ |
| ३. | द्वीपों का विभाग, षड्रत्न पर्वत का वर्णन, सुमेरु वर्णन, तथा द्वीप आदि का वर्णन | १४०४ |
| ४. | सुमेरु पर्वत के उत्तर भाग का वर्णन | १४११ |
| ५. | सुमेरु पर्वत के दक्षिण भाग का वर्णन | १४१३ |
| ६. | भारतवर्ष, उसकी नदियों तथा जनपदों का वर्णन | १४१५ |
| ७. | काल निर्णय पूर्वक भारत वर्ष के लोक स्थिति का वर्णन | १४२० |
| ८. | जम्बूद्वीप के विष्कम्भ वर्णन तथा शाकद्वीप का वर्णन | १४२२ |
| ९. | धृतसागर, दुग्ध सागर आदि का वर्णन तथा अवशिष्ट द्वीपों का विभाग | १४२५ |
| १०. | पृथिवी के तीर्थों और उनके माहात्म्य का वर्णन | १४२९ |
| ११. | महर्षि वसिष्ठ का राजा दिलीप को पुष्कर तीर्थ की महिमा सुनाना | १४३२ |
| १२. | अनेक तीर्थों के माहात्म्य का वर्णन | १४३५ |
| १३. | नारदजी द्वारा युधिष्ठिर को नर्मदा नदी की महिमा का विस्तार पूर्वक सुनाया जाना | १४३७ |
| १४. | ज्वालेश्वर तीर्थ की उत्पत्ति का वर्णन तथा त्रिपुर दहन का उपक्रम | १४४१ |
| १५. | शङ्करजी की प्रेरणा से अग्नि का त्रिपुर को जलाना | १४४५ |
| १६. | काबेरी नर्मदा सङ्गम माहात्म्य कुबेर स्थान का वर्णन | १४५२ |
| १७. | नर्मदा के उत्तर तट पर विद्यमान परेश्वर तीर्थ की महिमा | १४५५ |
| १८. | नर्मदा तट पर विद्यमान शूलभेद आदि अनेक तीर्थों का माहात्म्य | १४५७ |
| १९. | भार्गवेश्वर तीर्थ की महिमा तथा शुक्ल तीर्थ की उत्पत्ति और उसका माहात्म्य | १४६७ |
| २०. | नरकतीर्थ आदि अनेक तीर्थों का वर्णन भृगु महर्षि का शिवजी का वरदान और भृगु तीर्थ का वर्णन | १४७० |
| २१. | विहगेश्वर आदि अनेक तीर्थों का वर्णन | १४७८ |
| २२. | प्रमोहिनी आदि अनेक गन्धर्व कन्याओं का इतिहास | १४८२ |
| २३. | लोमश मुनि के साथ पिशाचियों और पिशाचों का सम्वाद | १४९३ |
| २४. | अन्य तीर्थों का माहात्म्य | १४९७ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|--|-------|
| २५. | कश्मीर के तक्षक आदि तीर्थों का वर्णन | १५०० |
| २६. | कुरुक्षेत्र, मत्तर्णक, पारिप्लव, तथा नैमिष आदि तीर्थों का माहात्म्य | १५०३ |
| २७. | कन्यातीर्थ, सोमतीर्थ आदि तीर्थों का वर्णन | १५१२ |
| २८. | धर्मतीर्थ तथा कलापवन आदि तीर्थों का वर्णन | १५२० |
| २९. | यमुनातीर्थ और यमुनातीर्थ में स्नान का माहात्म्य वर्णन | १५२३ |
| ३०. | हेमकुण्डल वैश्य के दो पुत्रों का इतिहास | १५२७ |
| ३१. | विकुण्डल के पूर्वजन्म का वृत्तान्त, देवदूत विकुण्डल संवाद, नरक प्रद कर्मों का वर्णन, और विकुण्डल की नरक से मुक्ति का वर्णन | १५३१ |
| ३२. | सुगन्ध तीर्थ तथा रुद्रावर्त आदि तीर्थों का वर्णन | १५५१ |
| ३३. | वाराणसी की महिमा | १५५४ |
| ३४. | वाराणसी के कृत्तिवासेश्वर तीर्थ का वर्णन | १५६० |
| ३५. | वाराणसी के कपर्दीश्वर और पिशाचमोचन तीर्थ का वर्णन | १५६२ |
| ३६. | वाराणसी के मध्यमेश्वर तीर्थ का माहात्म्य वर्णन | १५६८ |
| ३७. | वाराणसी के तीर्थों का माहात्म्य वर्णन | १५६९ |
| ३८. | वाराणसी तथा प्रयाग के अनेक तीर्थों का वर्णन | १५७१ |
| ३९. | सन्ध्यातीर्थ आदि अनेक तीर्थों का वर्णन | १५७७ |
| ४०. | शौनक आदि महर्षियों की प्रयाग तीर्थ के विषय में विशेष जिज्ञासा मार्कण्डेय युधिष्ठिर सम्वाद | १५८७ |
| ४१. | प्रयाग की महिमा का विस्तृत वर्णन | १५९१ |
| ४२. | प्रयाग तीर्थ में दान आदि की महिमा का वर्णन | १५९३ |
| ४३. | प्रयाग माहात्म्य | १५९६ |
| ४४. | प्रयाग के मानस तथा ऋणमोचन तीर्थ का वर्णन | १६०१ |
| ४५. | प्रयाग की गङ्गा तथा यमुना का माहात्म्य | १६०३ |
| ४६. | प्रयाग के पूज्यत्व का वर्णन | १६०७ |
| ४७. | सभी तीर्थों की अपेक्षा प्रयाग तीर्थ की महिमा की अधिकता का वर्णन | १६०९ |
| ४८. | प्रयाग के प्रजापतितीर्थत्व का प्रतिपादन | १६११ |
| ४९. | युधिष्ठिर द्वारा मार्कण्डेय महर्षि को महादान | १६१३ |
| ५०. | विष्णु भक्ति की महिमा | १६१४ |
| ५१. | वर्णाश्रम धर्म का सामान्य वर्णन | १६१८ |
| ५२. | कर्तव्य कर्म तथा निषिद्ध कर्म का वर्णन | १६२४ |
| ५३. | ब्रह्मचारी के धर्म का वर्णन | १६२९ |
| ५४. | गृहस्थ धर्म का वर्णन | १६३७ |

अध्याय

विषय

पृष्ठ

| | | |
|-----|--|------|
| ५५. | गृहस्थों के आचार का वर्णन | १६४० |
| ५६. | भक्ष्याभक्ष्य निरूपण | १६४९ |
| ५७. | दानधर्म का वर्णन | १६५३ |
| ५८. | वानप्रस्थाश्रम के आचार का वर्णन | १६६० |
| ५९. | यतिधर्म का निरूपण | १६६३ |
| ६०. | यतियों के नियम | १६६६ |
| ६१. | भगवान् विष्णु की भक्ति की महिमा का वर्णन | १६७० |

४. ब्रह्मखण्ड

| | | |
|-----|--|-------|
| १. | व्यास जैमिनि संवाद | १६८३ |
| २. | मन्दिर लेपन का माहात्म्य | १६८७ |
| ३. | श्रीभगवान् के मन्दिर में दीपदान का माहात्म्य वर्णन | १६९१ |
| ४. | जयन्ती व्रत के माहात्म्य का वर्णन | १६९४ |
| ५. | कर्म विपाक का वर्णन | १६९९ |
| ६. | वैकुण्ठ प्राप्ति के साधन का वर्णन | १७०३ |
| ७. | गोलोक प्राप्ति के साधनभूत राधाष्टमी व्रत का माहात्म्य | १७०७ |
| ८. | समुद्र मन्थन के उद्योग का वर्णन | १७११ |
| ९. | देवताओं और दैत्यों द्वारा क्षीरसागर का मन्थन और दारिद्रा देवी के स्थान का वर्णन | १७१३ |
| १०. | क्षीर सागर से लक्ष्मी देवी का प्राकट्य वर्णन | १७१६ |
| ११. | गुरुवार व्रत की महिमा | १७१८ |
| १२. | ब्राह्मण प्राणरक्षक राजा दीननाथ का वृत्तान्त | १७२६ |
| १३. | कृष्णजन्माष्टमी व्रत का माहात्म्य वर्णन | १७३२ |
| १४. | ब्राह्मण के माहात्म्य का वर्णन | १७४० |
| १५. | एकादशी व्रत का माहात्म्य | १७४४ |
| १६. | पूर्णिमा के दिन विष्णु पूजा का माहात्म्य वर्णन | १७४९ |
| १७. | श्रीभगवान् विष्णु के चरणोदक का माहात्म्य | १७५२ |
| १८. | अगम्यागमन जन्य दोष के प्रायश्चित्त का वर्णन | १७५५ |
| १९. | अभक्ष्य भक्षण के प्रायश्चित्त का वर्णन | १७५८ |
| २०. | कार्तिक माहात्म्य, कार्तिक के अनेक प्रकार के नियम, राधादामोदरपूजा तथा कलिप्रिया सहित शङ्कर वृषल का वृत्तान्त वर्णन | १७६१/ |
| २१. | कार्तिक मास के व्रत का विधान और नियम | १७६४ |

अध्याय

विषय

पृष्ठ

| | | |
|-----|--|------|
| २२. | तुलसी और आँवला का माहात्म्य वर्णन | १७६८ |
| २३. | विष्णुपञ्चक का माहात्म्य | १७७२ |
| २४. | पृथिवी आदि अनेक प्रकार के दानों के माहात्म्य और उनके फल का वर्णन | १७७५ |
| २५. | भगवन्नाम का माहात्म्य वर्णन | १७८० |
| २६. | प्रतिज्ञा पालन का फल तथा प्रतिज्ञा तोड़ने के दोष का वर्णन | १७८४ |



॥ श्रीः ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

592

श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितं
श्रीपद्ममहापुराणम्

हिन्दीटीका-अकारादिश्लोकानुक्रमणी सहित

(चतुर्थ भाग : पाताल खण्ड)

सम्पादक एवं टीकाकार
आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी
(श्रीधराचार्य)



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रम

५. पाताल खण्ड

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|---|-------|
| १. | श्रीराम चरित वर्णन का उपक्रम | १७८९ |
| २. | श्रीरामचन्द्रजी के द्वारा प्रेषित हनुमानजी का भरतजी के समीप जाना और श्रीरामचन्द्रजी के आगमन का समाचार सुनाना | १७९३ |
| ३. | श्रीरामचन्द्रजी का अयोध्या में प्रवेश | १७९६ |
| ४. | श्रीरामचन्द्रजी का राज्याभिषेक | १७९९ |
| ५. | सभी देवताओं द्वारा श्रीराम की स्तुति और रामराज्य का वर्णन | १८०४ |
| ६. | रावण आदि की उत्पत्ति का वर्णन | १८०९ |
| ७. | तपस्या से प्रसन्न ब्रह्माजी द्वारा रावण आदि को वर प्रदान करना | १८१३ |
| ८. | ब्रह्मवध से संतप्त श्रीरामचन्द्र जी को अगस्त्य महर्षि द्वारा अश्वमेध याग करने का उपदेश | १८१६ |
| ९. | महर्षि अगस्त्य का श्रीरामचन्द्र की अश्वशला में अश्वमेध यज्ञोपयोगी अश्व का निरीक्षण | १८१९ |
| १०. | अश्वमेध याग करने के लिए श्रीरामचन्द्र द्वारा रक्षकों के साथ अश्व को छोड़ना | १८२५ |
| ११. | श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञा से शत्रुघ्नजी का घोड़े की रक्षा के लिए जाना तथा पुष्कल की अपनी पत्नी से घेट वर्णन | १८३१ |
| १२. | यज्ञाश्व के साथ शत्रुघ्नजी का अहिच्छत्रा नगरी में आना और कामाक्षीपाख्यान | १८३८ |
| १३. | सुमद तथा अप्सराओं का संवाद तथा कामाक्षा देवी का प्रकट होकर सुमद को वरदान देना | १८४५ |
| १४. | राजा सुमद का शत्रुघ्नजी से संवाद तथा च्यवनोपाख्यान का उपक्रम | १८५१ |
| १५. | च्यवन एवं सुकन्या का उपाख्यान तथा ऋषि की तपस्या के प्रभाव का वर्णन | १८५६ |
| १६. | सुकन्या और च्यवन का महाराज शर्याति के यज्ञ में जाना और शर्याति के द्वारा सुकन्या की भर्त्सना तथा महर्षि च्यवन की अश्विनी कुमारों को सोमपान कराकर इन्द्र का मान भर्दन करना | १८६१ |
| १७. | शत्रुघ्नजी का अश्व के साथ बाजीपुर में जाने का वर्णन और काशी के राजा रत्नग्रीव का उपाख्यान | १८६५ |
| १८. | नील पर्वत पर निवास करने से चतुर्भुज स्वरूप की प्राप्ति का वर्णन | १८७१ |
| १९. | राजा रत्नग्रीव की तीर्थ यात्रा का वर्णन | १८७४ |
| २०. | गण्डकी तथा शालग्राम माहात्म्य का वर्णन | १८७९ |
| २१. | नीलगिरि पर जाकर राजा रत्नग्रीव का भगवान् पुरुषोत्तम की स्तुति करना | १८८७ |
| २२. | नीलगिरि पर्वत महिमा वर्णन | १८९१ |
| २३. | राजा सुबाहु की नगरी में अश्व का आना और दमन के साथ राजा प्रतापाश्रय का युद्ध वर्णन | १८९६ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|--|-------|
| २४. | दमन और पुष्कल का युद्ध और पुष्कल द्वारा दमन का पराजय | १९०३ |
| २५. | सुबाहु का अपनी सेना के साथ युद्धभूमि में आना | १९०८ |
| २६. | सुमति नामक मन्त्री के द्वारा राजा सुबाहु की सेना का अवलोकन | १९११ |
| २७. | पुष्कल द्वारा चित्राङ्ग का वध | १९१६ |
| २८. | राजा सुबाहु के पुत्र शोक का वर्णन | १९२० |
| २९. | सुबाहु तथा शत्रुघ्नजी का समागम | १९२६ |
| ३०. | अश्व के साथ शत्रुघ्नजी का तेजःपुर जाना और सत्यवान् आख्यान का उपक्रम | १९३१ |
| ३१. | राजा जनक का नरक द्वार पर जाने का कारण तथा सत्यवान् के धेनुव्रत का वर्णन | १९३७ |
| ३२. | सत्यवान् राजा का शत्रुघ्नजी को अपना राज्य समर्पण | १९४२ |
| ३३. | विद्युन्माली राक्षस के द्वारा अश्व का हरण और वीरों द्वारा उस राक्षस को मारने की प्रतिज्ञा | १९४४ |
| ३४. | विद्युन्माली का वध | १९४९ |
| ३५. | अश्व का रेवातट आरण्यकाश्रम में जाना और लोमशारण्यक संवाद | १९५६ |
| ३६. | लोमशमहर्षि द्वारा समय निर्देश पूर्वक वर्णित श्रीरामचरित का आरण्यक मुनि द्वारा वर्णन | १९६२ |
| ३७. | आरण्यक का अयोध्या जाना | १९६९ |
| ३८. | नर्मदा हृद में अश्व का स्नान | १९७४ |
| ३९. | अश्व का देवनगर में जाना | १९७९ |
| ४०. | वीरमणि के साथ शत्रुघ्नजी का युद्ध करने का निश्चय | १९८४ |
| ४१. | रुक्माङ्गद का पुष्कल के साथ युद्ध | १९८८ |
| ४२. | पुष्कल तथा वीरमणि के बीच भयङ्कर युद्ध और राजा वीरमणि का पराजय | १९९१ |
| ४३. | शत्रुघ्नजी और पुष्कल के पराजय का वर्णन | १९९८ |
| ४४. | शिवजी के साथ हनुमानजी का युद्ध, हनुमानजी के प्रहार से व्याकुल शिवजी को उनको वरदान देना, द्रोणालच के देवता का हनुमानजी से पराजय | २००२ |
| ४५. | द्रोणाचल से संजीवनी लाकर हनुमानजी का पुष्कल आदि वीरों को जीवित करना और शत्रुघ्नजी के स्मरण करते ही भगवान् श्रीरामचन्द्र का रणमण्डल में आना | २००९ |
| ४६. | शङ्करजी के साथ श्रीराम का समागम | २०१३ |
| ४७. | अश्व का हेमकूट पर्वत पर आना और उसके गात्रस्तम्भ का होना | २०१६ |
| ४८. | शौनक महर्षि द्वारा शत्रुघ्नजी को कर्मगति का उपदेश | २०२१ |
| ४९. | राजा सुरथ की राजधानी कुण्डल पुर में अश्व का जाना और राजा द्वारा अश्व का ग्रहण | २०२७ |
| ५०. | शत्रुघ्नजी द्वारा राजा सुरथ के पास अङ्गद को दूत के रूप में भेजना | २०३२ |
| ५१. | राजकुमार चम्पक के साथ पुष्कल का युद्ध | २०३७ |
| ५२. | सुरथ तथा हनुमानजी का भयङ्कर युद्ध | २०४३ |
| ५३. | राजा सुरथ द्वारा शत्रुघ्नजी के सभी योद्धाओं का बन्धन और श्रीरामचन्द्रजी का सुरथ की सभा में आना | २०४८ |
| ५४. | महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में लव के द्वारा अश्व का पकड़ा जाना | २०५१ |
| ५५. | वात्स्यायन का सीतात्याग विषयक प्रश्न तथा शेषजी के द्वारा उस वृत्तान्त का वर्णन | २०५४ |

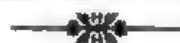
अध्याय

विषय

पृष्ठ

| | | |
|-----|---|------|
| ५६. | प्रातःकाल आकर गुप्तचरो का घोवों की बातों को श्रीरामचन्द्रजी को सुनाना | २०६१ |
| ५७. | सीता का पति से वियोग का कारण वर्णन | २०६७ |
| ५८. | लक्ष्मणजी का सीताजी को वन में छोड़ने के लिए जाना | २०७३ |
| ५९. | सीता लक्ष्मण सम्वाद जानकीजी का वन में परित्याग तथा कुश एवं लव की उत्पत्ति का वर्णन | २०७९ |
| ६०. | शत्रुघ्न के सेनापति कालजित् का लव के साथ युद्ध और कालजित् की मृत्यु | २०८७ |
| ६१. | शत्रुघ्न तथा लव के बीच घोर संग्राम एवं पुष्कल एवं हनुमानजी का पतन | २०९२ |
| ६२. | शत्रुघ्नजी के साथ युद्ध में लव की मूर्छा | २०९७ |
| ६३. | लव के मूर्छित होने से सीताजी का शोक करना तथा कुश एवं शत्रुघ्नजी का युद्ध एवं शत्रुघ्नजी का मूर्छित होना | २१०१ |
| ६४. | लव और कुश का हनुमान और सुग्रीव को बाँधकर सीताजी को दिखाना और युद्ध का वृत्तान्त बतलाना | २१०७ |
| ६५. | अश्व के साथ शत्रुघ्नजी आदि का अयोध्या आना | २११३ |
| ६६. | श्रीरामजी का वाल्मीकि महर्षि के साथ संवाद और सीताजी को वन से लाने के लिए लक्ष्मणजी का वन में जाना | २१२० |
| ६७. | लक्ष्मणजी के साथ सीताजी का श्रीरामचन्द्रजी के यज्ञमण्डप में आना और यज्ञ का प्रारम्भ | २१३५ |
| ६८. | श्रीरामचन्द्रजी का यज्ञान्त स्नान | २१४२ |
| ६९. | श्रीकृष्ण चरित्र का वर्णन | २१४६ |
| ७०. | भगवान् श्रीकृष्ण के पार्षदसमूह का वर्णन | २१५५ |
| ७१. | नारदजी का वृन्दावन में भगवान् श्रीकृष्ण और श्रीराधाजी का दर्शन करना | २१६० |
| ७२. | भगवान् श्रीकृष्ण के श्रेष्ठ सुन्दरी समूह का वर्णन | २१६९ |
| ७३. | भगवान् श्रीकृष्ण के स्वरूप वर्णन पूर्वक मथुरा का माहात्म्य वर्णन | २१८१ |
| ७४. | अर्जुन को राधा के स्वरूप का दर्शन पूर्वक स्त्रीत्व की प्राप्ति | २१८६ |
| ७५. | नारदजी को स्त्रीत्व की प्राप्ति | २२०३ |
| ७६. | भगवान् श्रीकृष्ण का गद्यमय संक्षिप्त चरित | २२०८ |
| ७७. | श्रीकृष्ण तीर्थ का वर्णन | २२०९ |
| ७८. | वैष्णव के धर्म और शालग्राम शिला के लक्षण आदि | २२१५ |
| ७९. | वैष्णवों के तिलक धारण आदि अनेक विधियों का वर्णन | २२१९ |
| ८०. | कलियुग में श्रीहरि नाम का माहात्म्य | २२२५ |
| ८१. | श्रीकृष्ण मन्त्रों के अर्थ का वर्णन | २२३० |
| ८२. | मन्त्र दीक्षा की विधि | २२३६ |
| ८३. | वृन्दावन में भगवान् की प्रतिदिन की लीला का वर्णन | २२४४ |
| ८४. | भगवद् ध्यान का वर्णन | २२५४ |
| ८५. | भक्ति का लक्षण और उसका भेद | २२६३ |
| ८६. | वैशाख माहात्म्य एवं स्नान विधि का वर्णन | २२७० |
| ८७. | देवशर्मा का वृत्तान्त | २२७५ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|--|-------|
| ८८. | ऋण सम्बन्धी आदि पुत्रों का तथा संसार की निःसारता का वर्णन | २२८२ |
| ८९. | देवशर्मा और सुमना संवाद | २२८४ |
| ९०. | देवशर्मा के विप्रत्व प्राप्ति के कारण का वर्णन | २२९० |
| ९१. | भगवान् विष्णु की प्रसन्नता से देवशर्मा और सुमना को पुत्र की प्राप्ति | २२९५ |
| ९२. | वैशाख मास की महिमा और चित्रोपख्यान | २२९७ |
| ९३. | वैशाख के महोने में रेवा नदी में स्नान करने का महत्त्व | २३०८ |
| ९४. | पाप प्रशमन स्तोत्र का माहात्म्य और पाँच पापियों का उपाख्यान एवं आठ प्रेतों की मुक्ति का वर्णन | २३०९ |
| ९५. | संक्षेप में वैशाख मास की विधि का वर्णन | २३२३ |
| ९६. | वैशाख के महोने में श्रीभगवान् की पूजा करने के माहात्म्य का वर्णन | २३३६ |
| ९७. | अनेक प्रकार के व्रतों के नियम तथा स्नान आदि का वर्णन | २३४९ |
| ९८. | वैशाख के महोने में विष्णुपूजा के विधान का वर्णन | २३५८ |
| ९९. | राजा महीरथ के वृत्तान्त का वर्णन | २३६९ |
| १००. | कश्यप ब्राह्मण के द्वारा राजा महीधर से वैशाख स्नान करवाना | २३७७ |
| १०१. | महीधर तथा देवदूत का सम्वाद | २३८० |
| १०२. | राजा महीधर के द्वारा वैशाख मास के स्नान जन्म एक दिन के पुण्य को देने से नारकीय जीवों के उद्धार का वर्णन | २३८५ |
| १०३. | भगवान् विष्णु का ध्यान और वैशाख माहात्म्य वर्णन की समाप्ति | २३८८ |
| १०४. | श्रीरामचन्द्रजी का श्रीरङ्गनगर में जाकर विभीषणजी को बन्धन मुक्त करना | २३९६ |
| १०५. | भस्म का माहात्म्य वर्णन | २४११ |
| १०६. | भस्म द्वारा कुत्ते को सुगति प्रदान वर्णन | २४३२ |
| १०७. | भस्म की महिमा वीरभद्र कृत भस्म के द्वारा मुनियों तथा देवताओं को जीवन प्रदान | २४४२ |
| १०८. | भस्म की महिमा | २४५० |
| १०९. | भस्म माहात्म्य | २४५७ |
| ११०. | शिवपूजन माहात्म्य | २४६७ |
| १११. | शिवजी के नाम, पूजा, नमस्कार तथा दर्शन का माहात्म्य | २४७६ |
| ११२. | शिवनाम माहात्म्य | २४८१ |
| ११३. | शम्भुमुनि द्वारा पुराण की महिमा और पौराणिक की पूजा का वर्णन | २४९४ |
| ११४. | महर्षि गौतम के गृह का वृत्तान्त वर्णन, महर्षि गौतम के घर बाण आदि असुरों का आना, महर्षि गौतम के घर ब्रह्मा विष्णु तथा शिव आदि का आना, भगवान् विष्णु तथा शिवजी की जलक्रीड़ा का वर्णन, महर्षि गौतम के घर देवताओं का भोज करना, शिव पार्वती संवाद, हनुमानजी द्वारा शिवलिङ्ग की पूजा, चारों युगों के धर्मों का वर्णन, हरि कीर्तन तथा पुराण | २४९९ |
| ११५. | पुराण श्रवण विधि और पुराण वाचनविधि | २५४२ |
| ११६. | जाम्बवान् के द्वारा पूर्व कल्प के रामकथा का वर्णन | २५५० |
| ११७. | भगवान् श्रीराम द्वारा कौसल्याम्बा के मासिक श्राद्ध का वर्णन | २५८४ |



॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

592



श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितं

श्रीपद्ममहापुराणम्

हिन्दीटीका-अकारादिश्लोकानुक्रमणी सहित

(पंचम भाग : उत्तर खण्ड - I)

सम्पादक एवं टीकाकार

आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी

(श्रीधराचार्य)



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

विषयानुक्रम

६. उत्तर खण्ड

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|--|-------|
| १. | महेश नारद संवादान्तर्गत शङ्करजी द्वारा उत्तर खण्ड के वर्ण्य विषयों का वर्णन | २६०६ |
| २. | बदरी नारायण का माहात्म्य | २६११ |
| ३. | युधिष्ठिर नारद संवादान्तर्गत जालन्धर की उत्पत्ति का वर्णन | २६१३ |
| ४. | जालन्धर के साथ वृन्दा का विवाह वर्णन | २६१८ |
| ५. | क्षीर सागर के मन्थन का कारण जानने के लिए जालन्धर द्वारा इन्द्र के पास दूत भेजना | २६२३ |
| ६. | दैत्य सेना का देव सेना के साथ युद्ध | २६२६ |
| ७. | विष्णु आदि देवताओं का कालनेमि आदि दैत्यों के साथ द्वन्द्व युद्ध | २६३१ |
| ८. | जालन्धर द्वारा इन्द्र का पराजय | २६३६ |
| ९. | जालन्धर द्वारा सभी देवताओं को परास्त करके सुराज्य की स्थापना का वर्णन | २६४३ |
| १०. | शङ्करजी द्वारा सभी देवताओं के तेज से चक्र का निर्माण | २६४५ |
| ११. | नारदजी द्वारा जालन्धर के समक्ष पार्वतीजी के सौन्दर्य का वर्णन | २६४९ |
| १२. | जालन्धर की युद्ध के लिए यात्रा | २६५३ |
| १३. | शुम्भ आदि का नन्दी आदि से युद्ध | २६६० |
| १४. | शिवजी तथा जालन्धर का घोर संग्राम | २६६५ |
| १५. | जालन्धर के द्वारा पार्वती से किए जाने वाले छल को जानकर भगवान् विष्णु द्वारा वृन्दा का हरण करने के लिए प्रयत्न करना | २६७० |
| १६. | भगवान् विष्णु का तपस्वी का वेष धारण करना | २६७७ |
| १७. | माया शिव जालन्धर की परीक्षा के लिए पार्वतीजी द्वारा पहले अपनी सखी को उसके पास भेजा जाना | २६८३ |
| १८. | जालन्धर का शङ्करजी के साथ युद्ध | २६८७ |
| १९. | दैत्यों का शिवजी के गणों के साथ युद्ध | २६९५ |
| २०. | श्रीशैल का माहात्म्य वर्णन | २७०८ |
| २१. | हरिद्वार का माहात्म्य वर्णन | २७१० |
| २२. | गङ्गाजी के पृथिवी पर जाने का वर्णन पूर्वक हरिद्वार की प्रशंसा | २७१४ |
| २३. | गङ्गा, यमुना, प्रयाग, काशी तथा गया गदाधर की स्तुति का वर्णन | २७१६ |
| २४. | प्रयागतीर्थ का माहात्म्य | २७२४ |
| २५. | तुलसी तथा शालग्राम का माहात्म्य वर्णन | २७२६ |
| २६. | तुलसी त्रिरात्र व्रत की विधि और उसके माहात्म्य का वर्णन | २७३१ |
| २७. | सभी दानों में अन्नदान की मुख्यता का वर्णन | २७३५ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|--|-------|
| २८ | जलदान इत्यादि की प्रशंसा | २७३७ |
| २९ | इतिहास पुराण के पाठ की प्रशंसा के प्रकरण में धर्मपाल के वृत्तान्त का वर्णन | २७४१ |
| ३० | गोपीचन्दन के माहात्म्य का वर्णन | २७४५ |
| ३१ | कार्तिक शुक्ल एकादशी को दोषव्रत के विधान का वर्णन | २७४८ |
| ३२ | हरिहन्द्र तथा सनत्कुमार के संवादान्तर्गत जन्माष्टमी व्रत के विधान का वर्णन | २७५८ |
| ३३ | पृथिवी दान तथा वस्त्र दान का माहात्म्य | २७६२ |
| ३४ | रोहिणी में शनि के जाने से रोकने का महाराज दशरथ का प्रयत्न | २७६८ |
| ३५ | प्राची माघव और जाह्नवी संवादान्तर्गत त्रिस्पृशा एकादशी व्रत की विधि का वर्णन | २७७३ |
| ३६ | उन्मीलनी एकादशी व्रत की विधि का वर्णन | २७८२ |
| ३७ | पक्षवर्द्धिनी एकादशी व्रत की विधि का वर्णन | २७८८ |
| ३८ | एकादशी के दिन जागरण करने का माहात्म्य | २७९१ |
| ३९ | जया, विजया और जयन्ती नामक एकादशियों का माहात्म्य वर्णन | २७९९ |
| ४० | मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की मोक्षदा एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८०९ |
| ४१ | पौष मास के कृष्ण पक्ष की सफला एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८१३ |
| ४२ | पौष मास के शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८१८ |
| ४३ | माघ कृष्णपक्ष की षट्तिला एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८२२ |
| ४४ | माघमास के शुक्लपक्ष की जया एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८२७ |
| ४५ | फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की विजया एकादशी का माहात्म्य | २८३२ |
| ४६ | फाल्गुन शुक्ल पक्ष की आमलकी एकादशी के माहात्म्य का वर्णन | २८३६ |
| ४७ | चैत्रकृष्ण पक्ष की पापमोचनी एकादशी का माहात्म्य | २८४१ |
| ४८ | चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की कामदा एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८४६ |
| ४९ | वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की वरूथनी एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८५० |
| ५० | वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की मोहिनी एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८५२ |
| ५१ | ज्येष्ठमास के कृष्ण पक्ष की अपरा नामक एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८५६ |
| ५२ | ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की निर्जला एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८५८ |
| ५३ | आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की योगिनी एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८६३ |
| ५४ | आषाढ़ शुक्ल पक्ष की हरि शयनी एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८६७ |
| ५५ | श्रावण कृष्ण पक्ष की कामिका एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८७० |
| ५६ | श्रावण मास के शुक्लपक्ष की पुत्रदा एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८७३ |
| ५७ | भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अजा एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८७८ |
| ५८ | भाद्रपद शुक्ल पक्ष की पद्मा एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८८० |
| ५९ | आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की इन्दिरा एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८८३ |
| ६० | आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पाशाङ्कुशा एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८८७ |
| ६१ | कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की रमा एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८८९ |
| ६२ | कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी का माहात्म्य वर्णन | २८९४ |
| ६३ | पुरुषोत्तम मास के कृष्णपक्ष की कमला एकादशी का माहात्म्य | २९०० |
| ६४ | पुरुषोत्तम मास के शुक्ल पक्ष की कामदा एकादशी का माहात्म्य | २९०४ |
| ६५ | चातुर्मास्य व्रत की विधि का वर्णन | २९०६ |

आख्याय

विषय

पृष्ठ

| | | |
|------|--|------|
| ६६. | चातुर्मास्य व्रत की उद्यापन की विधि | २९१६ |
| ६७. | यम की आराधन तथा वैतरणी व्रत का विधान वर्णन | २९१८ |
| ६८. | वैष्णव का लक्षण तथा माहात्म्य वर्णन | २९२६ |
| ६९. | श्रावण द्वादशी व्रत की विधि का वर्णन | २९२८ |
| ७०. | नदी त्रिरात्र व्रत का माहात्म्य वर्णन | २९३३ |
| ७१. | भगवन्नाम के माहात्म्य का वर्णन | २९३६ |
| ७२. | विष्णुसहस्रनाम की महिमा का वर्णन | २९७६ |
| ७३. | श्रीराम रक्षा स्तोत्र | २९७८ |
| ७४. | धर्म प्रशंसा पूर्वक दान धर्म का माहात्म्य वर्णन | २९७९ |
| ७५. | गण्डिका तीर्थ का माहात्म्य वर्णन | २९८२ |
| ७६. | आभ्युदयिकौर्ध्वदेहिक स्तोत्र | २९८४ |
| ७७. | ऋषि पञ्चमी व्रत की विधि | २९८८ |
| ७८. | अपामार्जनस्तोत्र | २९९३ |
| ७९. | अपामार्जन स्तोत्र के पाठ की विधि और उसका माहात्म्य | ३००१ |
| ८०. | भगवान् विष्णु का माहात्म्य वर्णन | ३००३ |
| ८१. | गङ्गा माहात्म्य वर्णन | ३०१६ |
| ८२. | वैष्णव का लक्षण वर्णन | ३०२० |
| ८३. | सभी मासों की विधि का वर्णन | ३०२३ |
| ८४. | चैत्र शुक्ल द्वादशी के दिन दमनक महोत्सव का वर्णन | ३०२७ |
| ८५. | वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ महीनों में श्रीभगवान् का जलशयन महोत्सव वर्णन | ३०३० |
| ८६. | पवित्रारोपण विधि का वर्णन | ३०३३ |
| ८७. | चैत्र आदि मासों के क्रम से चम्पा इत्यादि के पुष्पों से भगवान् विष्णु का पूजन | ३०३७ |
| ८८. | कार्तिक माहात्म्य वर्णन | ३०३९ |
| ८९. | गुणवती द्वारा कार्तिक मास का सेवन करने से सत्यभामात्व की प्राप्ति | ३०४३ |
| ९०. | पृथु नारद संवाद के अन्तर्गत शङ्खासुर के आख्यान का वर्णन | ३०४६ |
| ९१. | भगवान् विष्णु का मत्स्यावतार धारण करके शङ्खासुर के वध का वर्णन | ३०४९ |
| ९२. | कार्तिक व्रत करने वालों के नियमों का वर्णन | ३०५२ |
| ९३. | कार्तिक स्नान और अर्घ्य आदि का वर्णन | ३०५५ |
| ९४. | कार्तिक मास में अनुष्ठेय नियमों का वर्णन | ३०५८ |
| ९५. | कार्तिक व्रत के उद्यापन की विधि का वर्णन | ३०६० |
| ९६. | तुलसी माहात्म्य के प्रसङ्ग में जालन्धर की उत्पत्ति का वर्णन | ३०६३ |
| ९७. | जलन्धर दैत्य के द्वारा देवताओं की पराजय पूर्वक अमरावती विजय का वर्णन | ३०६७ |
| ९८. | जालन्धर दैत्य के भय से भयभीत देवताओं द्वारा सङ्कट नाशक विष्णु स्तोत्र वर्णन | ३०७० |
| ९९. | नारदजी के मुख से पार्वतीजी के सौन्दर्योत्तिशय को सुनकर जालन्धर का शिवजी के पास दूत भेजना | ३०७३ |
| १००. | शिवजी द्वारा सभी देवताओं के तेज से चक्र का निर्माण | ३०७६ |
| १०१. | नन्दी आदि का कालनेमि आदि के साथ द्वन्द युद्ध | ३०७९ |
| १०२. | शिवजी द्वारा जालन्धर का पराजय वर्णन | ३०८२ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|---|-------|
| १०३. | दुःस्वप्न देखकर उद्विग्न वृन्दा का वनो में भ्रमण | ३०८५ |
| १०४. | शङ्करजी द्वारा युद्ध में जालन्धर का वध | ३०८८ |
| १०५. | तीन बीजों से उत्पन्न आँवला, भालती और तुलसी को देखने से भगवान् विष्णु के भ्रम का नाश | ३०९१ |
| १०६. | कलहा चरित्र वर्णन | ३०९३ |
| १०७. | तुलसी मिश्रित जल के प्रक्षेप से कलहा को दिव्य देह की प्राप्ति का वर्णन | ३०९७ |
| १०८. | धर्मदत्त और भगवान् विष्णु के गण के संवादान्तर्गत विष्णुव्रत का माहात्म्य | ३१०० |
| १०९. | विष्णुदास ब्राह्मण और चोलराज की निःसीम भक्ति से वैकुण्ठ की प्राप्ति | ३१०३ |
| ११०. | जय विजय दोनों के पूर्वजन्म के वृत्तान्त का वर्णन | ३१०६ |
| १११. | कृष्णा वेणी आदि अनेक नदियों का माहात्म्य वर्णन | ३१०९ |
| ११२. | एकादशी, माघ, कार्तिक, तुलसी एवं द्वारका का माहात्म्य वर्णन | ३११३ |
| ११३. | कार्तिक व्रत की प्रशंसा और धनेश्वर ब्राह्मण का वृत्तान्त | ३११६ |
| ११४. | धनेश्वर का धनयक्ष के नाम से कुबेर के भृत्यत्व की प्राप्ति | ३११९ |
| ११५. | अश्वत्थ वट की प्रशंसा | ३१२२ |
| ११६. | अश्वत्थ वृक्ष की अस्पृश्यता वर्णन के प्रसङ्ग में अलक्ष्मी का वृत्तान्त वर्णन | ३१२५ |
| ११७. | शिवषडानन संवाद के अन्तर्गत कार्तिक स्नान के माहात्म्य का वर्णन | ३१२८ |
| ११८. | कार्तिक में तिल तथा गो दान का माहात्म्य | ३१३१ |
| ११९. | माघ स्नान आदि का माहात्म्य | ३१३७ |
| १२०. | शालग्राम पूजन का वर्णन | ३१४१ |
| १२१. | दीप, गन्ध, और आँवले का माहात्म्य | ३१४९ |
| १२२. | दीपावली का माहात्म्य वर्णन | ३१५२ |
| १२३. | प्रबोधिनी एकादशी का माहात्म्य | ३१६० |
| १२४. | माघमास का माहात्म्य वर्णन | ३१६८ |
| १२५. | माघ माहात्म्यन्तर्गत कार्तवीर्य और दत्तात्रेय संवाद का वर्णन | ३१८२ |
| १२६. | माघ स्नान की विधि का वर्णन | ३१८९ |
| १२७. | माघ स्नान के फल का वर्णन | ३२०४ |
| १२८. | चित्रराजा के वृत्तान्त का वर्णन | ३२३१ |
| १२९. | भगवान् विष्णु की महिमा का वर्णन | ३२५६ |
| १३०. | शालग्राम शिला के पूजन का माहात्म्य | ३२५८ |
| १३१. | भगवान् विष्णु का माहात्म्य वर्णन | ३२६१ |
| १३२. | पुष्कर आदि अनेक तीर्थों का माहात्म्य वर्णन | ३२७४ |
| १३३. | वेत्तवती नदी का माहात्म्य वर्णन | ३२७७ |
| १३४. | साप्रमती नदी का माहात्म्य वर्णन | ३२८० |
| १३५. | नन्दि तीर्थ की महिमा का वर्णन | ३२९० |
| १३६. | विकीर्ण तीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३२९२ |
| १३७. | श्वेता तीर्थ के माहात्म्य का वर्णन | ३२९४ |



॥ श्रीः ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
592
—♦—

श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितं
श्रीपद्ममहापुराणम्
हिन्दीटीका-अकारादिश्लोकानुक्रमणी सहित

(षष्ठ भाग : उत्तर खण्ड - II)

सम्पादक एवं टीकाकार
आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी
(श्रीधराचार्य)



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रम

६. उत्तर खण्ड

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|--|-------|
| १३८. | गणतीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३२९५ |
| १३९. | अग्नि पालेश्वर आदि तीर्थों की महिमा का वर्णन | ३२९६ |
| १४०. | हिरण्या सङ्गम तीर्थ की महिमा का वर्णन | ३३०० |
| १४१. | मधुरा आदि तीर्थ के माहात्म्य का वर्णन | ३३०२ |
| १४२. | कम्बु तीर्थ तथा कपोश्वर तीर्थ के माहात्म्य का वर्णन | ३३०६ |
| १४३. | एक धारा और सात धारा के माहात्म्य का वर्णन | ३३०७ |
| १४४. | ब्रह्मबल्ली आदि अनेक तीर्थों की महिमा का वर्णन | ३३१० |
| १४५. | सङ्गमेश्वर तीर्थ की महिमा का वर्णन | ३३१२ |
| १४६. | रुद्रमहातीर्थ की महिमा का वर्णन | ३३१४ |
| १४७. | खड्गतीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३३१५ |
| १४८. | मालार्क तीर्थ के माहात्म्य का वर्णन | ३३१६ |
| १४९. | चन्दनेश्वर के माहात्म्य का वर्णन | ३३१७ |
| १५०. | जाम्बवन्त तीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३३१८ |
| १५१. | धवलेश्वर माहात्म्य वर्णन पूर्वक शिवजी की पूजा से नन्दी तथा किरात दोनों को शिव के गणत्व की प्राप्ति | ३३२० |
| १५२. | बालावती वृत्तान्त तथा बालपेन्द्र तीर्थ का माहात्म्य | ३३२८ |
| १५३. | दुर्धर्षेश्वर माहात्म्य वर्णन | ३३३२ |
| १५४. | खड्गधारेश्वर माहात्म्य | ३३३४ |
| १५५. | दधीचि वृत्तान्त तथा दुग्धेश्वर माहात्म्य | ३३४० |
| १५६. | चन्द्रेश्वर तथा चन्द्रभागा के माहात्म्य का वर्णन | ३३४४ |
| १५७. | पिप्पलाद तीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३३४६ |
| १५८. | निम्बार्कदेवतीर्थ माहात्म्य का वर्णन | ३३४७ |
| १५९. | कोटरा तीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३३४९ |
| १६०. | वामनतीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३३५० |
| १६१. | सोमतीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३३५१ |
| १६२. | कपोताख्यान और कपोत तीर्थ के माहात्म्य का वर्णन | ३३५२ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|---|-------|
| १६३. | गोतीर्थ का माहात्म्य | ३३५४ |
| १६४. | कश्यप हृद का माहात्म्य | ३३५५ |
| १६५. | भूतेश्वर तीर्थ और वैद्यनाथ माहात्म्य | ३३५६ |
| १६६. | पाण्डुरार्या तीर्थ का माहात्म्य | ३३५८ |
| १६७. | चण्डेश तीर्थ और गणेश तीर्थ का माहात्म्य | ३३५९ |
| १६८. | भौष्प युधिष्ठिर संवदान्तर्गत भूतेश्वर की कृपा से इन्द्र द्वारा वृत्रासुर के पराजय का वर्णन | ३३६० |
| १६९. | वाराह तीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३३६६ |
| १७०. | सङ्गम तीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३३६७ |
| १७१. | आदित्यतीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३३६८ |
| १७२. | नीलकण्ठ तीर्थ का माहात्म्य वर्णन | ३३६९ |
| १७३. | साप्रमती माहात्म्य वर्णन | ३३६९ |
| १७४. | नृसिंह जयन्ती व्रत का वर्णन | ३३७० |
| १७५. | श्रीमद्भगवद् गीता के प्रथम अध्याय का माहात्म्य | ३३७९ |
| १७६. | वेद में विख्यात गीता के द्वितीय अध्याय का माहात्म्य | ३३८४ |
| १७७. | जड़ ब्राह्मण की कथा तथा श्रीमद्भगवद् गीता के तृतीय अध्याय का माहात्म्य | ३३८९ |
| १७८. | गीता के चतुर्थ अध्याय का माहात्म्य वर्णन | ३३९४ |
| १७९. | पिङ्गल नामक ब्राह्मण का वृत्तान्त वर्णन पूर्वक भगवद् गीता के पाञ्चवें अध्याय का माहात्म्य वर्णन | ३३९८ |
| १८०. | श्रीमद्भगवद् गीता के छठे अध्याय का माहात्म्य वर्णन | ३४०० |
| १८१. | शङ्कुर्कण ब्राह्मण के वृत्तान्त के माध्यम से गीता के सातवें अध्याय का माहात्म्य वर्णन | ३४०९ |
| १८२. | ताली वृक्ष रूप धारण करने वाले विप्र भावशर्मा के आख्यान के माध्यम से गीता के आठवें अध्याय का माहात्म्य | ३४१२ |
| १८३. | माधव ब्राह्मण की कथा पूर्वक नवें अध्याय का माहात्म्य | ३४१५ |
| १८४. | गीता के दशवें अध्याय का माहात्म्य वर्णन | ३४२० |
| १८५. | गीता के विश्वरूप नामक एकादशवें अध्याय का माहात्म्य वर्णन | ३४२८ |
| १८६. | राजकुमार के कथानक पूर्वक गीता के बारहवें अध्याय का माहात्म्य | ३४३८ |
| १८७. | हरि दीक्षित की पत्नी का वृत्तान्त वर्णन पूर्वक गीता के तेरहवें अध्याय का माहात्म्य वर्णन | ३४४३ |
| १८८. | शौर्यवर्मा तथा विभ्रवेताल नामक दोनों राजाओं के वृत्तान्त वर्णन पूर्वक गीता के चौदहवें अध्याय का माहात्म्य वर्णन | ३४४८ |
| १८९. | गौड़ाधिपति नरसिंह का वृत्तान्त वर्णन पूर्वक गीता के पन्द्रहवें अध्याय का माहात्म्य वर्णन | ३४५२ |
| १९०. | सौराष्ट्र के राजा खड्ग बाहु के द्वारा ब्राह्मण के मुख से गीता के सोलहवें अध्याय के उपदेश से उद्धार वर्णन पूर्वक गीता के सोलहवें अध्याय का माहात्म्य | ३४५६ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|--|-------|
| १९१. | भालव राजा के पुत्र के भृत्य के हाथी द्वारा मारे जाने के कारण गजत्व की प्राप्ति तथा गीता के सत्रहवें अध्याय के जप के प्रभाव से उनकी मुक्ति की प्राप्ति | ३४५९ |
| १९२. | गीता के अठारहवें अध्याय के पाँच श्लोकों का जप करने वाले को इन्द्रपद की प्राप्ति पूर्वक अठारहवें अध्याय का माहात्म्य वर्णन | ३४६१ |
| १९३. | सूत शौनक संवाद के माध्यम से श्रीमद्भागवत महापुराण का माहात्म्य | ३४६७ |
| १९४. | ज्ञात तथा वैराग्य सहित दुर्बल बनी हुयी भक्ति प्रबोधन वाक्य के द्वारा सनकादिकों द्वारा दिये गये वरदान के माध्यम से भक्ति की संस्थापना का वर्णन | ३४७४ |
| १९५. | कुमारों के उपदेश से नारद, भृगु आदि महर्षियों का दरापुरी में जाना भागवत सप्ताह का प्रारम्भ, कुमारों द्वारा भक्ति को स्थान प्रदान | ३४८१ |
| १९६. | श्रीमद्भागवत माहात्म्य के अन्तर्गत गोकर्ण के वृत्तान्त पूर्वक आत्मदेव का धुन्धुकारी नामक पुत्र द्वारा पीड़ित होना तथा गोकर्ण की सान्त्वना से आत्मदेव का वन में जाना एवं उन्हें मुक्ति की प्राप्ति का वर्णन | ३४८८ |
| १९७. | वेश्याओं द्वारा धुन्धुकारी का वध, धुन्धुकारी को पिशाचत्व की प्राप्ति, धुन्धुकारी की दशा से दुःखी गोकर्ण का ब्राह्मणों को सारी बातें बतलाना, सूर्यनारायण की आज्ञा से धुन्धुकारी के निमित्त श्रीमद्भागवत सप्ताह को करना और धुन्धुकारी की मुक्ति | ३४९६ |
| १९८. | सनत् कुमार आदि के द्वारा उक्त श्रीमद्भागवत सप्ताह के श्रवण की विधि | ३५०७ |
| १९९. | कालिन्दी माहात्म्य और इन्द्र याग का वर्णन | ३५१८ |
| २००. | श्रीभगवान् की प्रेरणा से इन्द्रप्रस्थ में अनेक तीर्थों की स्थापना, शिवशर्मा के पुत्र विष्णु शर्मा की कथा, विष्णु शर्मा द्वारा अपने पिता को पूर्वजन्म का वृत्तान्त सुनाना, कालिन्दी तट पर विद्यमान तीर्थ में सिंह तथा भिल्ल दोनों की वैकुण्ठ की प्राप्ति का वर्णन | ३५२२ |
| २०१. | इन्द्रप्रस्थ के माहात्म्य वर्णन पूर्वक शिवशर्मा के पूर्वजन्म में वैश्यकुल के वृत्तान्त का वर्णन | ३५३२ |
| २०२. | राजा दिलीप के वृत्तान्त का वर्णन | ३५४२ |
| २०३. | देवल वैश्य सम्वाद के अन्तर्गत राजा दिलीप के द्वारा अपनी रानी के साथ महर्षि वसिष्ठ की धेनु नन्दिनी को चराना आदि सेवा कर्म का वर्णन तथा नन्दिनी द्वारा परीक्षा किया जाना माया सिंह के साथ दिलीप का सम्वाद तथा नन्दिनी द्वारा वरदान प्रदान | ३५४७ |
| २०४. | देवल महर्षि के कहने से शरभ वैश्य का पुनः भगवती की पूजा करना, प्रसन्न पार्वतीजी के द्वारा सपत्नीक वैश्य को इन्द्रप्रस्थ तीर्थ में स्नान करने को कहना, उससे शरभ को पुत्र की प्राप्ति, शरभ द्वारा गृह का त्याग और राक्षस शरभ संवाद | ३५५३ |
| २०५. | शरभ के मित्र राक्षस का इन्द्रप्रस्थ तीर्थ का वर्णन | ३५६६ |
| २०६. | काम्पिल्य नगर में रहने वाले ब्राह्मण के द्वारा बधुओं का उद्धार | ३५७० |
| २०७. | सौभरि युधिष्ठिर संवाद के अन्तर्गत नारद और शिवि की वार्ता के प्रसङ्ग में विमल ब्राह्मण के कथानक का वर्णन | ३५७७ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|---|-------|
| २०८ | विमल ब्राह्मण का अपने मित्र ब्राह्मण के साथ इन्द्रप्रस्थ की द्वारका की यात्रा करना, विमल ब्राह्मण के द्वारा लौटकर राक्षस योनि प्राप्त की हुयी नगर की नारियों को द्वारका के जल से जिसको उन्होंने अपने कमण्डलु में रखा था उससे उद्धार करना | ३५८३ |
| २०९. | अयोध्या माहात्म्य के प्रसङ्ग में राजा के चोर नाई के द्वारा मुकुन्द नामक ब्राह्मण के घर में चोरी करना और उसको मारना, उनकी माता, पत्नी तथा बान्धवों का विलाप करना, वेदायन महर्षि के द्वारा उन सबों को दृश्य जगत् के मिथ्यात्व का प्रति पादन करके उन सबों को तत्त्व ज्ञान प्रदान करना | ३५९० |
| २१०. | कपड़े में बँधे हुए मुकुन्द की हड्डियों को कुत्ते के द्वारा इन्द्रप्रस्थ के कोशलपुरी में गिराया जाना, उसके बाद देवलोक जाने के लिए तैयार मुकुन्द की मृत्यु के पश्चात् अपने गुरु वेदायन को अपनी गति बतलाना और उसको स्वर्ग की प्राप्ति | ३५९५ |
| २११. | नागरिकों के अनुरोध से मुकुन्द की हत्या के अपराध के कारण राजा द्वारा चण्डक नामक नाई के शिर को काटने का चन्द्रभागा नदी की मर्यादा के बाहर अपने मन्त्री को आज्ञा देना, इस पापी के सर्प गति का वर्णन, किसी ब्राह्मण के अस्थियों की मञ्जूषा में सर्प का प्रवेश, सर्प के प्रवेश के बाद अयोध्या में तीर्थ यात्रियों द्वारा अपनी लाठी के प्रहार द्वारा सौंप को मारना, तीर्थ में मृत्यु होने के कारण उस पापी की स्वर्ग प्राप्ति का वर्णन | ३६०२ |
| २१२. | इन्द्रप्रस्थ में विद्यमान कोशल के माहात्म्य का वर्णन | ३६०७ |
| २१३. | कुशल ब्राह्मण की पत्नी के दुराचारमय वृत्तान्त के वर्णन पूर्वक मधुवन तीर्थ का माहात्म्य वर्णन और गोधा (गोह) की योनि में गयी हुयी उसका अपने पुत्र के द्वारा उद्धार | ३६१२ |
| २१४. | मुनि पुत्र का अपने पिता की आज्ञा से माता के उद्धार के लिए मधुवन में श्राद्ध करना | ३६२० |
| २१५. | मनु के पुत्र के पूर्वजन्म में कुण्ड के रूप में उत्पन्न होने के कारण का वर्णन उसी के प्रसङ्ग में बुध द्वारा दिये गये शाप और उसके अनुग्रह का वर्णन | ३६२९ |
| २१६. | बदरिकाश्रम माहात्म्य वर्णन के प्रसङ्ग में देवदास नामक ब्राह्मण का अपने पुत्र के साथ संवाद, उसको राज्य का भार सौंपकर अपनी रानी के साथ मुनि वृत्ति का आचरण करने के लिए जाना, मार्ग के बीच में सिद्ध पुरुष द्वारा वैशिष्ट्य का प्रतिपादन | ३६३५ |
| २१७. | हरिद्वार माहात्म्य वर्णन के प्रसङ्ग में कलिङ्ग चाण्डाल के वृत्तान्त वर्णन के माध्यम से वैश्य का वृत्तान्त वर्णन | ३६४४ |
| २१८. | विदर्भ नगर में रहने वाले मालव ब्राह्मण के कथा के माध्यम से उसके द्वारा अपनी पुत्री के पुत्र को गोदावरी के तट पर सुवर्ण दान देना तथा घर जाते हुए अपने भाई भरत के कटे शरीर के कारण का ज्ञान | ३६४८ |
| २१९. | पुण्डरीक भरत संवाद के अन्तर्गत पुष्कर तीर्थ की महिमा के साथ प्रयाग के माहात्म्य का वर्णन | ३६५३ |
| २२०. | इन्द्रप्रस्थ में विद्यमान प्रयाग तीर्थ के माहात्म्य के प्रसङ्ग में विश्वावसु नामक गन्धर्व के कथानक का वर्णन, माहिष्मती नामक नगर में रहने वाली मोहिनी के वृत्तान्त का वर्णन | ३६५८ |

अध्याय

विषय

पृष्ठ

२२१. द्रविड देश के राजा वीरवर्मा की रानी हेमाङ्गी के द्वारा इन्द्रप्रस्थ तीर्थ करने के लिए अपने पति से प्रतिज्ञा का वर्णन करना और उन दोनों का तीर्थ यात्रा करने के लिए प्रस्थान करना ३६६२
२२२. नारद शिवि संवाद के अन्तर्गत इन्द्रप्रस्थ स्थित काशी शिव काञ्ची इत्यादि तीर्थ सप्तक तथा भीमकुण्ड के माहात्म्य का वर्णन तथा उन तीर्थों से सम्बद्ध अनेक आख्यानों के वृत्तान्तों का वर्णन ३६६७
२२३. वसिष्ठ दिलीप सम्वाद के अन्तर्गत श्रीभगवान् के मन्त्र दीक्षा के प्रसङ्ग में विद्योपदेश का वर्णन ३६७५
२२४. वसिष्ठ दिलीप संवाद के अन्तर्गत प्रसङ्गत पार्वतीजी के पूछने पर शिवजी द्वारा भक्ति की विधि का प्रकाशन ३६८२
२२५. ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण विधि पूर्वक ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण का माहात्म्य ३६८९
२२६. उमामहेश्वर संवाद के अन्तर्गत ओं नमो नारायण इस मन्त्र के अर्थ का उपदेश ३६९४
२२७. भगवान् नारायण की त्रिपाद् विभूति का वर्णन ३७०१
२२८. त्रिपाद् विभूति में विद्यमान लोकों का वर्णन ३७०८
२२९. उमा महेश्वर संवाद के अन्दर त्रिपाद् विभूति में भगवान् विष्णु के व्यूहों के भेदों का वर्णन ३७१७
२३०. श्रीभगवान् की विभूति वर्णन पूर्वक उनके मत्स्यावतार का वर्णन ३७३१
२३१. श्रीभगवान् के कूर्मावतार का वर्णन के प्रसङ्ग में दुर्वासा महर्षि द्वारा शाप प्रदान का वर्णन ३७३४
२३२. कूर्मावतार वर्णन के प्रसङ्ग में लक्ष्मीजी की प्राप्ति के लिए देवताओं द्वारा क्षीरसागर के मन्थन का वर्णन ३७३९
२३३. लक्ष्मीजी के प्रादुर्भाव के समय देवताओं द्वारा की गयी स्तुति, उसी के अन्तर्गत एकादशी के दिन उपवास करने का माहात्म्य वर्णन ३७४५
२३४. एकादशी व्रत निर्णय और द्वादशी का माहात्म्य वर्णन ३७४७
२३५. उमामहेश्वर सम्वाद के अन्तर्गत श्रीभगवान् द्वारा नमुचि आदि राक्षसों का मारा जाना और पाषण्ड की उत्पत्ति का वर्णन ३७५१
२३६. उमामहेश्वर संवाद के अन्तर्गत अठारह पुराण तथा अनेक दर्शनों के वर्णन के प्रसङ्ग में सात्त्विक आदि शास्त्रों का वर्णन ३७५७
२३७. उमामहेश्वर संवाद के अन्तर्गत भगवान् विष्णु के विभवावस्था के वर्णन के प्रसङ्ग में सनकादिकों द्वारा जय और विजय को शाप देना, शाप से अभिभूत उन दोनों का राक्षस योनि में जाना, तदर्थ वराहवतार का वर्णन तथा हिरण्याक्ष वध का वर्णन ३७६०
२३८. हिरण्यकशिपु के पापाचरण से पीड़ित त्रिलोकी का उद्धार वर्णन के अन्तर्गत प्रह्लाद की कथा के वर्णन के प्रसङ्ग में नृसिंहावतार का वर्णन ३७६३
२३९. बलिराज के उपाख्यान के अन्तर्गत वामन प्रादुर्भाव का वर्णन ३७७७
२४०. वटु का वेष बनाये हुए वामन का बली के याग में जाकर यज्ञ करने के लिए तीन डग पृथिवी की याचना करना और उसकी स्वीकृति मिल जाने पर दो ही डग में भूलोक से लेकर ब्रह्मलोक पर्यन्त नाप लेना ब्रह्माजी के कमण्डलु में गङ्गाजी की उत्पत्ति का वर्णन ३७८०

अध्याय

विषय

पृष्ठ

२४१. श्रीपरशुराम चरित्र के अन्तर्गत जमदग्नि तथा हैहयाधिपति का कामधेनु की प्राप्ति के लिए विवाद और युद्ध का वर्णन जमदग्नि महर्षि का मारा जाना, श्रीपरशुरामजी द्वारा की गयी क्षत्रियहीन पृथिवी का वर्णन ३७८५
२४२. श्रीरामावतार के वर्णन के प्रसङ्ग में स्वायम्भुव मनु द्वारा तपस्या किया जाना, त्रेतायुग में महाराजा दशरथ के गृह में श्रीराम का अवतार तथा श्रीराम के वनवास का वर्णन ३७९३
२४३. रामाभिषेक पूर्वक श्रीरामजी का दर्शन करने के लिए शङ्करजी के साथ देवताओं का आना, विश्वरूप का दर्शन, शिवजी द्वारा सीतारामजी की स्तुति और उसके फल का वर्णन ३८२२
२४४. उत्तम राम चरित के अन्तर्गत गर्भवती सीताजी को जनापवाद के भय से महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में त्याग, काल के साथ प्रतिज्ञा के बाद लक्ष्मणजी द्वारा द्वार की रक्षा में नियुक्त किया जाना, महर्षि दुर्वासा का आगमन, एकान्त में दुर्वासा ऋषि के आगमन की सूचना लक्ष्मणजी द्वारा दिया जाना, लक्ष्मणजी द्वारा दिव्य देह का धारण, श्रीरामचन्द्रजी का लोगों के साथ दिव्यधाम में पदार्पण ३८२६
२४५. श्रीकृष्णावतार की कथा के प्रसङ्ग में कंस, जरासन्ध आदि राक्षसों के उत्पात से भयभीत पृथिवी का ब्रह्माजी के पास जाना, देवताओं के साथ ब्रह्माजी का भगवान् विष्णु के समीप जाकर उनकी प्रार्थना करना, पृथिवी के भार को दूर करने के लिए भगवान् विष्णु का आश्वासन देना, कारावास में विद्यमान वसुदेव के गृह में भगवान् कृष्ण का प्रादुर्भाव, भगवान् कृष्ण को वृन्दावन में लाया जाना, कंस के अत्याचार का वर्णन, पूतना आदि का मारा जाना, श्रीकृष्ण के द्वारा अनेक दिव्य लीला का प्रदर्शन और कंस का वध ३८३५
२४६. श्रीकृष्णचरित के अन्तर्गत बलरामजी तथा श्रीकृष्ण भगवान् के उपनयन, सन्दीपनि के गृह में उन दोनों द्वारा विद्या का अध्ययन, जरासन्ध के साथ युद्ध तथा जरासन्ध को जीवन दान, काल यवन के साथ युद्ध तथा लीला करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण का गुफा में प्रवेश करना कालयवन को देखकर मुचकुन्द का जगना, कालयवन की मृत्यु और मुचकुन्द की मुक्ति ३८६७
२४७. जरासन्ध पराजय के साथ द्वारका जाकर भगवान् श्रीकृष्ण का अनेक राज कन्याओं के साथ विवाह करना, रुक्मिणी स्वयम्बर में रुक्मि के साथ विरोध होने के कारण विदर्भ सेना का विध्वंस ३८७३
२४८. श्रीकृष्ण चरित के अन्तर्गत रुक्मिणी विवाह का वर्णन ३८७७
२४९. सत्यभामा विवाह एवं स्यमन्तक मणि का उपाख्यान, सत्राजित् के पुत्र प्रसेन का वन में सिंह के द्वारा मारा जाना, और उसके द्वारा स्यमन्तक मणि का हरण, जाम्बवान के द्वारा सिंह का मारा जाना और उनको मणि की प्राप्ति, मणि हरण के विषय में भगवान् कृष्ण का अपवाद और उस अपवाद को दूर करने के लिए मणि की खोज करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण का जाम्बवान् के साथ युद्ध और जाम्बवान् की पराजय, पूर्वजन्म में भगवान् राम के द्वारा की गयी प्रतिज्ञा को बार-बार स्मरण करके जाम्बवान् के द्वारा भगवान् कृष्ण की प्रार्थना, जाम्बवती का विवाह, मद्राज के पुत्रियों के साथ भगवान् का विवाह नरका सुर का वध, सत्यभामा का

- शची के द्वारा अपमान, उसका प्रतिशोध करने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा कल्पवृक्ष को उखाड़कर गरुड़ पर रखा जाना, इन्द्र द्वारा भगवान् कृष्ण की प्रार्थना शची के द्वारा सत्यभामा का सम्मान ३८७९
२५०. बाणासुर संग्राम के प्रसङ्ग में उषा तथा अनिरुद्ध का प्रणय, बाणासुर द्वारा अनिरुद्ध को कारागृह में डाला जाना, नारदजी की सूचना के द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा आक्रमण, वहाँ वैष्णव तथा माहेश्वर अस्त्रों का युद्ध, ज्वर की उत्पत्ति, भगवान् कृष्ण द्वारा महादेवजी को मूर्छित किया जाना, पार्वतीजी की प्रार्थना से मूर्छा का हरण और शङ्करजी द्वारा की गयी भगवान् कृष्ण की स्तुति ३८८८
२५१. श्रीकृष्णचरित के प्रसङ्ग में काशिराज पौण्ड्रक वासुदेव का वध तथा काशिराज के पुत्र दण्डपाणि की कृत्या के विध्वंस का वर्णन ३८९६
२५२. श्रीकृष्ण चरित के अन्तर्गत जरासन्ध वध पूर्वक भगवान् कृष्ण द्वारा अपने सहपाठी सुदामा का सादर सम्मान, उनको धनपतित्व प्रदान और महाभारत युद्ध की कथा का वर्णन ३८९९
२५३. उमामहेश्वर संवाद के अन्तर्गत भगवान् विष्णु की पूजा के विधान के साथ वैष्णवों के आचार का वर्णन ३९०९
२५४. महर्षि वामदेव के द्वारा पार्वतीजी को भगवान् विष्णु के दिव्य सहस्र नाम का उपदेश, श्रीराम शब्द की व्याख्या, महादेवजी द्वारा सहस्रनाम तुल्यता का प्रतिपादन और भगवान् रामचन्द्र के अष्टोत्तर शत नामों का वर्णन ३९२३
२५५. वसिष्ठ दिलीप संवाद के अन्तर्गत भृगु महर्षि के द्वारा महर्षियों के अनुरोध से ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश के सात्त्विकत्व की परीक्षा तथा श्रीविष्णु भगवान् के श्रेष्ठत्व का प्रतिपादन एवं पद्मपुराण के सुनने का फल वर्णन ३९३०



॥ श्रीः ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
592
✚

श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितं
श्रीपद्ममहापुराणम्
हिन्दीटीका-अकारादिश्लोकानुक्रमणी सहित

(सप्तम भाग : क्रियायोगसार खण्ड एवं श्लोकानुक्रमणी)

सम्पादक एवं टीकाकार
आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी
(श्रीधराचार्य)



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रम

७. क्रियायोगसार खण्ड

| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|--------|---|-------|
| १. | जैमिनि व्यास संवाद पूर्वक क्रियायोगसार की पूर्व पीठिका | ३९४२ |
| २. | जैमिनि व्यास संवाद के अन्तर्गत भगवान् विष्णु की प्रकृति के वर्णन पूर्वक पञ्च महाभूतों की उत्पत्ति पूर्वक सृष्टि के प्रारम्भ में योगनिद्रा में गये हुए भगवान् विष्णु द्वारा ब्रह्माजी की प्रार्थना से जगत् मधु कैटभ का वध किया जाना, ब्रह्माजी द्वारा की गयी भगवान् विष्णु की स्तुति, प्रसन्न हुए भगवान् विष्णु द्वारा ब्रह्माजी को सृष्टि करने का वरदान देना, वैष्णव लक्षण का वर्णन, भगवान् विष्णु का अन्तर्धान होना, ब्रह्माजी द्वारा सृष्टि किया जाना, और इस अध्याय के पढ़ने से होने वाले फल का वर्णन | ३९४६ |
| ३. | गङ्गा माहात्म्य के साथ गृध्र द्वारा मनोमद राजा के दो पुत्रों के पूर्व जन्म का वर्णन तथा गृध्र दम्पति की मुक्ति का वर्णन | ३९५६ |
| ४. | व्यास जैमिनि संवाद के अन्तर्गत प्रयाग माहात्म्य के वर्णन के प्रसङ्ग में प्रणिधि वैश्य की कथा का वर्णन | ३९६५ |
| ५. | विक्रमपुत्र माधव के वृत्तान्त के प्रसङ्ग में गङ्गासागर माहात्म्य का वर्णन | ३९७६ |
| ६. | वीरवर के छद्मवेष में रहने वाली राजकुमारी के दारा भीमनाद को वध, परिणत हुए उसके रूप से बीच मार्ग में दिव्य रथ पर चढ़े हुए पुरुष को देखकर उसके सन्निकट उसके पूर्व जन्म के वृत्तान्त का श्रवण, पुरुष वेष वाली सुलोचना के लिए राजा का अपनी पुत्री को प्रदान किया जाना, अपने नगर में जाना, प्रवेष्ट को पाश में बन्दी बनाना, राजकुमार माधव के साथ मिलन और उन दोनों का विवाह | ३९९३ |
| ७. | गङ्गाजी का माहात्म्य वर्णन | ४०११ |
| ८. | गङ्गा माहात्म्य वर्णन- २ | ४०२३ |
| ९. | गङ्गा माहात्म्य- ३ | ४०३३ |
| १०. | माघ आदि महिनों में भगवान् विष्णु की पूजा से अनन्त फल की प्राप्ति का वर्णन | ४०४६ |
| ११. | श्रीहरि की पूजा की विधि का वर्णन | ४०५३ |
| १२. | श्रीभगवान् विष्णु की अर्चना के प्रकार पुरस्सर अश्वत्थ पूजन और विष्णु भगवान् के पूजन में होने वाले अभेद का वर्णन तथा धनञ्जय ब्राह्मण की कथा | ४०६६ |
| १३. | भिन्न-भिन्न महिनों में विभिन्न प्रकार के पुष्पों तथा द्रव्यों के विधान पुरस्सर प्रजा नामक ब्राह्मण की अपूर्व शबर वंश में उत्पत्ति के वृत्तान्त पूर्वक, श्रीहरि की भक्ति करने से मुक्ति की प्राप्ति तथा श्रीहरि की पूजा के फल का वर्णन | ४०७७ |

अध्याय

विषय

पृष्ठ

| | | |
|------------------|---|------|
| १४. | श्रीभगवान् की पूजा का माहात्म्य वर्णन | ४०९१ |
| १५. | भगवान् के नाम के प्रभाव वर्णन के प्रसङ्ग में परशु नामक वैश्य की पत्नी जिसका पति मर गया था उस जीवन्ती, जो कामार्त बनी रहती थी, उसका अपने पिता के घर से निष्कासन, वेश्या का काम करने वाली का किसी भाग्यवशात् किसी बहेलिए के पास से शुक शावक को खरीदना, उसका पालन करना, वात्सल्य गुण के कारण उसको रामनाम पढ़ाना, राम नाम की महिमा से उसके पाप समूह का नाश उन दोनों के मर जाने पर विष्णु दूतों का यमदूतों के साथ युद्ध के पश्चात् उन दोनों को वैकुण्ठ में ले जाना, यमराज द्वारा रामनाम की प्रशंसा | ४०९५ |
| १६. | श्रीहरि की भक्ति की प्रशंसा के प्रसङ्ग में शबर जाति में उत्पन्न चक्रिक का आख्यान वर्णन | ४१०४ |
| १७. | पुरुषोत्तम क्षेत्र में रहने वाले भद्रतनु नामक ब्राह्मण का वृत्तान्त वर्णन, वेश्या के उपदेश द्वारा दान्त मुनि के आश्रम में जाना, उनके आदेश से भगवान् विष्णु की भक्ति करना, और प्रसन्न हुए भगवान् विष्णु द्वारा उनको वरदान प्रदान | ४११० |
| १८. | पुरुषोत्तम क्षेत्र के माहात्म्य वर्णन के प्रसङ्ग में गुडिवा यात्रा के फल का वर्णन | ४१३५ |
| १९. | विष्णु माहात्म्य पूर्वक उर्वीशु ब्राह्मण की कथा | ४१४० |
| २०. | दान का माहात्म्य वर्णन | ४१५१ |
| २१. | अन्नदान और जल दान के माहात्म्य के प्रसङ्ग में ब्राह्मण के पैर धोए हुए जल से भषक की मुक्ति और उसके पूर्वजन्म की कथा पूर्वक हरिशर्मा नामक ब्राह्मण के वृत्तान्त का वर्णन | ४१६५ |
| २२. | एकादशी के श्रेष्ठत्व के प्रतिपादन पूर्वक उसके व्रत की विधि तथा फल का वर्णन | ४१७७ |
| २३. | एकादशी माहात्म्य के प्रसङ्ग में कोचरश राजा की पटरानी और सुप्रज्ञा के पूर्व जन्म के वृत्तान्त का वर्णन तथा धर्मात्माओं और पापात्माओं की भक्ति का निरूपण | ४१८९ |
| २४. | तुलसी माहात्म्य | ४२०४ |
| २५. | अतिथि पूजन के प्रसङ्ग में लोमश ब्राह्मण की कथा का वर्णन | ४२१० |
| २६. | युगधर्म निरूपण पूर्वक पुराण का माहात्म्य वर्णन | ४२१७ |
| श्लोकानुक्रमणिका | | ४२२३ |

